कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः18, अंकः 12
सितम्बर : 2019

इस अंक में......

पर्यावरण के संरक्षण के प्रति सचेतता जरूरी.
— आकांक्षा यादव........06

हिन्दी को बाहर से नहीं अपितु अपने भीतर से ही खतरा है........
—डॉ0 आई.ए.मंसूरी.... 09

हिंदी के सामने असली चुनौतियाँ ......
—शिवन कृष्ण रैणा......11

दूसरों की पीड़ा अथवा आवश्यकता को अनुभव करने वाला ही वास्तव में मनुष्य कहलाने का अधिकारी होता है ..16

स्थायी स्तम्भ
अपनी बातः असली दोषी कौन? 04
प्रेरक प्रसंग 05
व्यंग्यः पाखंड 13
अध्यात्मः 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में है विश्व की समस्याओं का समाधान ... 18
प्रथम गुरु माता 26

कविताए/गीत/ग़ज़लः डॉ० नीता अग्रवाल, अनिल द्विवेदी 'तपन', सुधा मिश्रा, राधेलाल नवचक्र, संतोष श्रीवास्तव 'सम', देवेन्द्र कुमार मिश्रा, शबनम शर्मा, पं. मुकेश चतुर्वेदी, कृष्ण चन्द्र टवाणी, डॉ० जय सिंह अलवरी, अखिलेश निगम 'अखिल', आराधना शुक्ला ....20 —23
कहानीः किनारा-महाश्वेता चतुर्वेदी 24
साहित्य समाचार, ...6, 15, 29, 31, 32, 33
लघु कथाएंः जे. वी. नागरत्नमा, हरिहर चौधरी, वेद प्रकाश कंवर .27—29
स्वास्थ्यः सेहत के लिए जरुरी है 30
डॉ० अरुण कुमार आनन्द-एक नज़र 34

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.—93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011 का0: 09335155949
ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।

प्रिंट लाईन—विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन—जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद—विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

असली दोषी कौन?

अपने देश में प्रत्येक समस्या के लिए दोषी आम जनता है. ऐसा हम नहीं कहते बल्कि हमारे देश की व्यवस्था, कार्यप्रणाली, नियमावली कहती है. आपने अपनी गाढ़ी कमाई को एकत्र कर, सेवानिवृत्ति से प्राप्त निधि अथवा बैंक से ऋण लेकर कहीं शहर में कोई जमीन पंसद की, कागज देखे और खरीद ली. आपका नाम राजस्व अभिलेखों में दर्ज भी हो गया. आपने धीरे-धीरे एक-एक ईट जोड़वाकर मकान बना लिये. नगर निगम, नगर पंचायत, नगर क्षेत्र से नक्शा भी पास हुआ, बिजली और जलकल विभाग से बिजली और पानी का प्रवाह भी प्रारंभ करा लिया. फिर पांच-दस वर्ष बाद आपको नगर क्षेत्र, नगर पंचायत, नगर निगम, विकास प्राधिकरण से नोटिस मिलती है कि आपका मकान अवैध है. एक माह के अंदर गिरा ले अथवा आपसे खर्च वसूली के साथ गिरा दिया जाएगा और एक दिन ऐसा आता है कि आपका सपनों का महल जमींदोज हो जाता है. आप बूत बनकर, अपनी जीवन भर की गाढ़ी कमाई से तैयार अपने सपनों के महल को देखते रह जाते है.

दूसरा बेरोजगारी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है. अखबारों में, व्हाट्सएप, फेसबुक एवं अन्य ऑन लाईन माध्यमों से नौकरी के लिए विज्ञापन निकलते है, बेरोजगारी की मार झेल रहे युवा वर्ग इन लोक लुभावन विज्ञापनों घर बैठे करोड़ो रुपये कमाएं, आपकी लॉटरी निकली है, फला कंपनी को कक्षा 8 पास, 10वीं पास, 12वीं स्नातक पास लड़के लड़कियों की आवश्यकता है. इन विज्ञापनों के आकर्षण के आगे बेरोजगारी की मार झेल रहे, मंहगे मोबाइलों और बाईकों के शौकिन युवा/युवतियां मजबूर हो जाते है. बिना कुछ सोचे समझे ऑन लाईन आवेदन कर देते है. फिर ये विज्ञापन प्रकाशित करने वाली कथित कंपनिया कभी रजिस्ट्रेशन, कभी ड्रेस, प्राईवेट बैंक में खाता खोलने के नाम पर ऑन लाईन पैसे मंगवाते रहते है. ये बेरोजगार युवक/युवतियां जब अपने दोस्तों यारों, परिचितों से उधार लेकर पच्चीस पचास हजार रुपये लूटा चुके होते है तब उन्हें खबर लगती है कि ये तो फर्जी कंपनी है. फर्जी नियुक्ति पत्र, फर्जी मेडिकल, फर्जी आई कार्ड. इन बेरोजगारों को हाथ मलने के सिवा कुछ नहीं मिलता. ऐसे मामलों में थाना-पुलिस में शिकायत करने पर भी इन ढगी के शिकार बेरोजगारों को सिर्फ और सिर्फ फटकार ही मिलती है. घर से फटकार, बाहर से फटकार और ऊपर से बेरोजगारी की मार का दंश. इन बेरोजगारों को कुछ गलत कदम उठाने पर मजबूर कर ही देती है. चाहें लूट-पाट, चोरी-छिनैती, अपहरण करना हो या आत्म हत्या करने तक को मजबूर हो जाते है. लेकिन इससे मिलेगा क्या? क्या आपकी बेरोजगारी दूर हो जायेगी, बिलकुल नहीं. आपने उल्टे अपराध की दूनियां में प्रवेश कर लिया जिसकी जिंदगी का कोई न तो भविष्य है और ना ही वर्तमान है. ये आपको मरते दम तक परेशान करेगी. आपने बेरोजगारी की मार में, फर्जी कंपनी की मार का दंश झेलने के लिए अपराध की दुनियां के ऐसे दलदल में फंस गये हो जिसका अंत आपके लिए ही नहीं बल्कि पूरे परिवार के लिए दुःखद ही है. अगर आपने आत्म हत्या कर ली तो क्या मिला आपको? आप तो गये, बच गये तो और गये. मर गये तो अपने जन्म दात्री माँ और पालक पिता को भी जीतेजी मार दिया. अगर आपके बीबी-बच्चे है तो उनका जीवन भी आपने मार दिया. ऐसे कार्य करने से क्या फायदा. ऐसे में जरूरत है कि जब भी कोई विज्ञापन, लॉटरी का सिस्टम आने का संदेश/विज्ञापन देखे सबसे पहले उसकी गहनता को जांचे. कोई सरकारी/गैर सरकारी/लिमिटेड कंपनी या विभाग जब विज्ञापन निकालता है तो उसके आवेदन फीस अधिकतम एक हजार से अधिक के कभी नहीं होते है. वे आपसे आई-कार्ड, मेडिकल चेक अप, ड्रेस, खाता खुलवाने का पैसे नहीं लेती है.

सजग रहे, सतर्क रहे, आगे, पीछे, बायें दाये देखे, सोचे फिर कार्य को अंजाम दे. बेरोजगारी ठीक लेकिन ये ...

संपादक

प्रेरक प्रसंग

तन्मयता के बिना सृजन नहीं

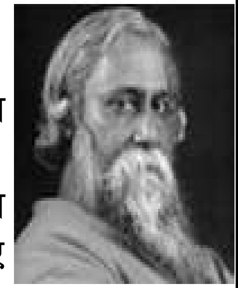

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर शान्ति निकेतन के अपने एकान्त कमरे में कविता लिखने में तल्लीन थे. तभी नीरवता को बेधती हुई एक आवाज आई-'रूको' आज तुम्हें खत्म ही कर देता हूँ? रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने दृष्टि उठाई देखा एक डकैत चाकू लिए हुए उन पर वार करने के लिए प्रस्तुत है. वे कविता लिखने में पुनः तल्लीन हो गए और धीरे से कहा-'मुझे मारना चाहते हो, ठीक है मारना, लेकिन एक बहुत ही सुन्दर भाव आ गया है, कविता पूरी कर लेने दो.' भाव में इतने डूबे कि उन्हें याद ही नहीं कि उनका हत्यारा इतना निकट है.

इधर हत्यारे ने सोचा-ये कैसा आदमी है? मैं चाकू के लिए खड़ा हूँ. उस पर कोई असर नहीं. गुरूदेव की कविता जब समाप्त हुई उन्होंने दरवाजे की ओर दृष्टि डाली मानों कह रहे हों-अब मैं खुशी से मर सकता हूँ, लेकिन यह क्या? हत्यारे ने चाकू बाहर फेंक दिया और उनके चरणों में बैठकर रोने लगा

बच्चा (भाजपा समर्थक मम्मी से): अभी मैंने टीवी में देखा है भारत में आर्थिक मंदी का दौर. अब आपकी साड़ी बंद? मम्मी (बच्चे से): मैंने तो वोट दिया था कि बाल बच्चेदार नहीं है, हम लोगों की आमदनी बढ़ायेगा. मगर ये तो उनसे भी ....

दाऊजी

पर्यावरण के संरक्षण के प्रति सचेतता जरूरी

वैश्विक स्तर पर मात्र 31 प्रतिशत क्षेत्र वनों से आच्छादित है, जबकि 36 करोड़ एकड़ वन क्षेत्र प्रतिवर्ष घट रहा है. नतीजन 1141 प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है. वहीं जंगलों पर निर्भर 1.6 अरब लोगों की आजीविका खतरे में है.

-आकांक्षा यादव,
लखनऊ, उ०प्र०

मनुष्य और पर्यावरण का संबंध काफी पुरानी और गहरा है. पर्यावरण के बिना जीवन ही संभव नही है. प्राचीन ग्रंथों में वर्णित पंच तत्व क्षिति, जल, पावक, गगन एवं समीर मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं. ये तत्व आवश्यकतानुसार समस्त जीव के उपयोग-उपभोग में अपनी भूमिका निभाते हैं. मानव अपनी आकांक्षाओं के लिए इन तत्वों पर निर्भर हैं. इनका एक निश्चित तारतम्य जीवन को नए प्रतिमान देता है, पर जब किन्हीं कारणों से इनका असंतुलन बिगड़ता है तो पर्यावरण-संतुलन भी बिगड़ता है, जो अंततः न सिर्फ मानव बल्कि सभ्यताओं को प्रभावित करता है. ऐसे में जरूरत है कि इनका दोहन नहीं बल्कि सतत् विकास द्वारा सवंदेनशील उपयोग किया जाए.

पर्यावरण के प्रति बढ़ती असंवेदनशीलता आज भयावह परिणाम उत्पन्न कर रही है. एक तरफ बढ़ती जनसंख्या, उस पर से प्रकृति का अनुचित दोहन, वाकई यह संक्रमणकालीन दौर है. यदि हम अभी भी नही चेते तो सभ्यताओं के अवसान में देरी नही लगेगी. वैश्विक स्तर पर देखें तो धरती का मात्र 31 प्रतिशत क्षेत्र वनों से आच्छादित है, जबकि 36 करोड़ एकड़ वन क्षेत्र प्रतिवर्ष घट रहा है. नतीजन 1141 प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है. वहीं जंगलों पर निर्भर 1.6 अरब लोगों की आजीविका खतरे में है.

बढ़ते पर्यावरण-प्रदूषण ने जल-थल-नभ किसी को भी नहीं छोड़ा है. पृथ्वी का तीन चौथाई हिस्सा जलमग्न है, जिसमें करीब 0.3 फीसदी में से भी मात्र 30 फीसदी जल ही पीने योग्य बचा है. तभी तो 76.8 करोड़ लोगों को दुनिया में पीने के लिए साफ पानी तक नहीं मिलता. नतीजन, दुनिया में प्रतिवर्ष 18 लाख बच्चे पानी की कमी और बीमारियों के कारण दम तोड़ देते हैं. वहीं प्रतिवर्ष 22 लाख लोग जलजनित बीमारियों के चलते मौत के मुँह में समा जाते है. संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक 2025 तक 2.9 अरब अतिरिक्त लोग जल आपूर्ति के संकट में इजाफा ही करेंगे.

यदि भारतीय परिप्रेक्ष्य में बात करें तो जिस गंगा नदी को जीवनदायिनी माना जाता है, उसमें 1 अरब लीटर सीवेज मिलता है. ऐसे में स्वाभाविक है कि गंगा में बैक्टीरिया का स्तर 2800 गुना बढ़ गया है. इसी प्रकार यमुना नदी की बात करें तो अकेले राजधानी दिल्ली का 57 फीसदी कचरा यमुना में डाला जाता है। यहाँ 3053 मिलियन लीटर सीवेज पानी यमुना में हर रोज बहाया जाता है. कहना गलत न होगा कि 80 फीसदी यमुना दिल्ली में ही प्रदूषित होती है.

सिर्फ जल ही क्यों, जिस वायु में हम साँस लेते हैं, वह भी प्रदूषण से ग्रस्त है. पिछले 5 सालों में वायु में 8—10 फीसदी कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ़ी है, नतीजन 5 करोड़ बच्चे हर समय वायु प्रदूषण से बीमार होते हैं. अकेले एशिया में 53 लाख लोग प्रदूषित वायु के चलते मौत के मुँह में चले जाते है. हाल ही में अमेरिका की येल और कोलंबिया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की ओर से 132 देशों में कराए गए वायु गुणवत्ता अध्ययन की मानें तो वायु-प्रदूषण के मामले में भारत आखिरी दस देशों में शामिल है. 132 देशों में भारत को 125 वाँ स्थान मिला है, जबकि चीन को 116वाँ.

एक तरफ बढ़ती जनसंख्या, दूसरी तरफ बढ़ता पर्यावरण-प्रदूषण ऐसे में उनके बीच परस्पर संतुलन की शीघ्र आवश्यकता है. मानव और पर्यावरण के मध्य असंतुलन से जहाँ अन्य जीव-जंतुओं व वनस्पतियों की प्रजातियाँ नष्ट होने के कगार पर हैं, वहीं ग्रीन हाउस के बढ़ते उत्सर्जन व ग्लोबल वार्मिंग से स्वच्छ साँस तक लेना मुश्किल हो गया है. मानवीय जीवन में बढ़ती भौतिकता एवं प्रकृति व पर्यावरण के प्रति बढ़ती उदासीनता, लापरवाही, बेपरवाही व दोहन ने विनाश-लीला का तांडव आरंभ कर दिया है. पृथ्वी पर बढ़ते तापमान के चलते जलवायु-परिवर्तन भी हो रहा है. एक वैज्ञानिक रिपोर्ट के अनुसार-जलवायु परिवर्तन से हर वर्ष लगभग तीन लाख

लोग मर रहे हैं, जिनमें से अधिकतर विकासशील देशों के है. ग्लोबल ह्यूमैनिटेरियन फोरम की एक रिपोर्ट के अनुसार-1906 से 2005 के मध्यम पृथ्वी का तापमान 0.74 डिग्री सेल्सयिस बढ़ा है और हाल के वर्षों में इसमें उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है. वर्ष 2100 तक यह तापमान न्यूनतम दो डिग्री सेल्सयिस बढ़ने के आसार है."

संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक 2030 तक वैश्विक ऊर्जा की जरूरत में 60 फीसदी की वृद्धि होगी. ऐसे में निर्वहनीय विकास के लिए तत्काल ध्यान दिए जाने की जरूरत है. कोयला और पेट्रोल के अधिकाधिक उपयोग से वायुमंडल में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ़ रही है, जिससे पृथ्वी के औसत तापमान में भी वृद्धि हो रही है. वैज्ञानिकों का मानना है कि पृथ्वी पर संतुलित तापमान के लिए वायुमंडल में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा 0.3 फीसदी रहना जरूरी है. इसमें असंतुलन भयावह स्थिति पैदा कर सकता है. ओजोन परत जहाँ पराबैंगनी किरणों से धरा की रक्षा करता है, वहीं नित्-प्रतिदिन बढ़ते एयर कंडीशनर व रेफ्रीजरेटर एवं प्लास्टिक उद्योग में उपयोग किए जाने वाले क्लोरोफ्लोरो कार्बन के उत्सर्जन से ओजोन परत को नुकसान पहुँच रहा है. इससे जहाँ पराबैंगनी किरणों के प्रवाह के चलते त्वचा कैंसर जैसी बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं, वहीं ग्लेशियरों के पिघलने के चलते तमाम दीपों व देशों पर खतरा मंडरा रहा है. आर्कटिक क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन पर 2004 में प्रकाशित एक अध्ययन रिपोर्ट में दावा किया गया है कि आर्कटिक क्षेत्र में विश्व के अन्य भागों की अपेक्षा तापमान-वृद्धि दुगनी गति से हो रहा है. वस्तुतः आर्कटिक क्षेत्र में बर्फीली सतहें अधिक कारगर ढंग से सूर्य-ऊष्मा का परावर्तन करती हैं, पर अब तापमान बढ़ने एवं हिमखंडों के तीव्रता से पिघलने के कारण अनाच्छादित भूक्षेत्र व सागर तल द्वारा अपेक्षाकृत अधिक ऊष्मा ग्रहण की जा रही है, जिससे यह क्षेत्र अत्यंत तीव्र गति से गर्म होता जा रहा है. ऐसे में महासागरों का जलस्तर बढ़ने से तमाम द्वीपों व देशों के विलुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो गया है. इससे जहाँ जनसंख्या पलायन की समस्या उत्पन्न हुई है, वहीं समुद्री जीव-जंतुओं के विलुप्त होने की संभावनाएं भी उत्पन्न हो गई है.

जिस गंगा नदी को जीवनदायिनी माना जाता है, उसमें 1 अरब लीटर सीवेज मिलता है. गंगा में बैक्टीरिया का स्तर 2800 गुना बढ़ गया है. इसी प्रकार यमुना नदी में तो अकेले राजधानी दिल्ली का 57 फीसदी कचरा यमुना में डाला जाता है. यहाँ 3053 मिलियन लीटर सीवेज पानी यमुना में हर रोज बहाया जाता है.

वस्तुतः जब हम पर्यावरण की बात करते हैं तो यह एक व्यापक शब्द है, जिसमें पेड़-पौधे, जल, नदियाँ, पहाड़ इत्यादि से लेकर हमारा समूचा परिवेश सम्मिलित है. हमारी हर गतिविधि इनसे प्रभावित होती है और इन्हें प्रभावित करती भी है. भारतीय मानस वृक्षों में देवताओं का वास मानता है. इतना ही नहीं वह वृक्षों को देवशक्तियों के प्रतीक और स्वरूप के रूप में भी देखता, समझता है. उदाहरण के लिए पीपल के वृक्ष में त्रिदेव यानी ब्रह्मा, विष्णु व शिव का वास होता है. इसी प्रकार आंवले के पेड़ में लक्ष्मीनारायण के विराजमान होने की परिकल्पना की गई है. इसके पीछे वृक्षों को संरक्षित रखने की भावना निहित है. कभी लोग गर्मी में ठंडक के लिए पहाड़ों पर जाया करते थे, पर वहाँ भी लोगों ने पेड़ों को काटकर रिसॉर्ट और होटल बनाने आरंभ कर दिए. कोई यह क्यों नहीं सोचता कि लोग पहाड़ों पर वहाँ के मौसम, प्राकृतिक परिवेश की खूबसूरती का आनंद लेना चाहते हैं, न की कंक्रीटों का. पर लगता है जब तक यह बात समझ में आयेगी तब तक काफी देर हो चुकेगी. ग्लोबल वार्मिंग अपना रंग दिखाने लगी है, लोग गर्मी में 45 पर तापमान के आने का रो रहे हैं, पर इसके लिए कोई कदम नहीं उठाना चाहता.

सारी जिम्मेदारी बस सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं की है. जब तक हम इस मानसिकता से नहीं उबरेंगे, तब तक पर्यावरण के नारों से कुछ नहीं होने वाला है. आइये आज कुछ ऐसा सोचते हैं, जो हम कर सकते है. जिसकी शुरुआत हम स्वयं से या अपनी मित्रमंडली से कर सकते है. हम क्यों सरकार का मुँह देखे? पृथ्वी हमारी है, पर्यावरण हमारा है तो फिर इसकी सुरक्षा भी तो हमारा कर्तव्य है. कुछ बातों पर गौर कीजिये, जिसे हम अपने परिवार और मित्र-जनों के साथ मिलकर करने की सोच सकते है. आप भी इस ओर एक कदम बढ़ा सकते है.

जैव-विविधता के संरक्षण एवं प्रकृति के प्रति अनुराग पैदा करने हेतु फूलों को तोड़कर उपहार में बुके देने की बजाय गमले में लगे पौधे भेंट किये जाएँ. स्कूल में बच्चों को पुरस्कार के रूप में पौधे देकर, उनके अन्दर बचपन से ही पर्यावरण संरक्षण का बोध कराया जा सकता है. इसी प्रकार सूखे वृक्षों को तभी काटा जाय, जब उनकी जगह कम से कम दो नए पौधे लगाने का प्रण लिया जाय. जीवन के यादगार दिनों मसलन-जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगाँठ या अन्य किसी शुभ कार्य की स्मृतियों को सहेजने के लिए पौधे लगाकर उनका पोषण करना चाहिए, ताकि सतत-संपोष्य विकास की अवधारणा निरंतर फलती-फूलती रहे. यह और भी समृद्ध होगा यदि अपनी वंशावली को सुरक्षित रखने हेतु ऐसे बगीचे तैयार किये जाएँ, जहाँ हर पीढ़ी द्वारा लगाये गए पौधे मौजूद हों। यह मजेदार भी होगा और पर्यावरण को सुरक्षित रखने की दिशा में एक नेक कदम भी. आज के उपभोक्तावादी जीवन में इको-फ्रेंडली होना बहुत जरूरी है. पानी और बिजली का अपव्यय रोककर हम इसका निर्वाह कर सकते है. फ्लश का इस्तेमाल कम से कम करें. शानो-शौकत में बिजली की खपत को स्वतः रोककर लोगों को प्रेरणा भी दे सकते हैं. इसी प्रकार री-सायकलिंग द्वारा पानी की बर्बादी रोककर और टॉयलेट इत्यादि में इनका उपयोग किया जा सकता है. मानव को यह नहीं भूलना चाहिए कि हम कितना भी विकास कर लें, पर पर्यावरण की सुरक्षा को ललकार कर किया गया कोई भी कार्य समूची मानवता को खतरे में डाल सकता है. अतः जरूरत है कि अभी से प्रकृति व पर्यावरण के संरक्षण के प्रति सचेत हुआ जाए और इसे समृद्ध करने की दिशा में तत्पर हुआ जाय.

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र में: कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), स्व.किशोरी लाल सम्मान (श्रृंगार रस की एक रचना पर), महादेवी वर्मा सम्मान (छायावादी रचना पर) **गद्य के क्षेत्र में:** डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान (नाटक) उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान (कहॉनी/उपन्यास/लघु कथा) **हिन्दी सेवी सम्मान**-ऐसे व्यक्ति जो किसी भी प्रकार से हिन्दी सेवा कर रहे हों अथवा हिन्दी का प्रचार/प्रसार, हिन्दी के विकास के लिए कार्य कर रहे हों। **समाज सेवा के क्षेत्र में:** समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-ऐसे व्यक्ति जो कम से कम गत 5 वर्षो से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान दे रहे है. **कलाश्रीः** (कला/संस्कृति/लोकनृत्य/शास्त्रीय संगीत/अभिनय/संगीत/पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए), **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान** -(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी अन्य क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) (युवाओं की उम्र 35 वर्ष से कम हो) **विशेषः** १. प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और 150 रुपये मात्र का धनादेश/डाक टिकट आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. २.रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. ३. निर्णायंक मण्डल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा. किसी प्रकार के विवाद के सदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

अंतिम तिथिः 30 नवम्बर 2019

अध्यक्ष,
श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास
65ए/2, लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड,
धूमनगंज, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.,
मो०: 09335155949, ईमेल-psdiit@rediffmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक

एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद—211011, मो0: 9335155949

एक प्रति—15/रुपये, वार्षिक—150/रुपये,
पंचवर्षीय—700/रुपये, आजीवन—2100/रुपये

14 सितम्बर पर विशेष

हिन्दी को बाहर से नहीं अपितु अपने भीतर से ही खतरा है

-डॉ.आई.ए.मंसूरी शास्त्री,
संपादक-भाग्य दर्पण

हिन्दी शब्द की उत्पत्ति 14 वीं सदी में बहमनी राज्य से हुई. फारसी के विद्वान फरिश्ता के अनुसार बहमनी राज्य (14वीं सदी) के कार्यालय में बहमनी भाषा 'हिन्दी' के नाम से विख्यात हुई और इसे हिन्दी संज्ञा भी प्रदान की गई. 'हिन्दी' शब्द मूलतः फारसी भाषा का शब्द है. जिसका अर्थ हिन्द का या हिन्दी से संबन्धित है. इस शब्द की निष्पति 'सिन्धु' से हुई है. फारसी भाषा में 'स' का उच्चारण 'ह' से किया जाता है, अतः हिन्दी शब्द सिन्धु शब्द का प्रतिरूप है. ईरान का प्राचीन नाम परशिया था. परशियन आर्य थे जो मूर्ति और अग्नि पूजक थे. हज़रत उमर के समय में अरबियों ने सिकन्दर से परशिया को जीतने के बाद मूर्ति पूजकों को सिन्धु नदी की ओर खदेड़ दिया. चूंकी उनकी भाषा फारसी थी अतः उन्होंने सिन्धु नदी को हिन्दू नदी कहा तथा सिन्धु नदी के इस पार रहने वालों को हिन्दू कहा. सप्त सिन्धु को भी उन्होंने हप्त हिन्दू कहा. परशियन इंग्लिश डिक्शनरी पेज 1514 ले.एफ.स्टेनग्रास व परशियन जेम डिक्शनरी 1960 में दरिया-ए-हिण्ड के इस पार रहने वालों को हिण्डयन कहा गया है. सिकन्दर द्वारा दिये गये 'इण्डस' नाम से ही अंग्रेजों ने इसका नाम इण्डिया रखा था. पैगम्बर हज़रत मोहम्मद साहब से 2300 वर्ष पूर्व में हुए एक अरबी कवि लबी बिन-ए-अख्तब-बिन-ए-तुरफा ने अपनी कविता में वैदिक धर्म के अनुयायियों को 'हिन्दू' कहकर सम्बोधित किया. प्राचीन काल के ज्ञात देश हमे सिन्धु या हिन्दू नाम से ही जानते थे.

इस बाजारवादी युग में हिन्दी का प्रयोग काफी बढ़ा है, लेकिन तकनीकी और लाभ-हानि की मानसिकता ने युवा वर्ग को अपनी भाषा से अलग करने का कार्य भी किया है. यह स्थिति हिन्दी के लिए खतरनाक हो सकती है. हिन्दी को बाहर से नहीं अपितु अपने भीतर से ही खतरा है. क्षेत्रीयता के विस्तार ने हिन्दी भाषा के सामने चुनौती रख दी है. भाषा सत्ता के नही जनता के सहारे विकसित होती है. हमे अंग्रेजी भाषा से नहीं अंग्रेजियत से खतरा है. हिन्दी 135 विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है. संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी भाषा दूसरे स्थान पर है.

हिन्दी को अपना गौरवमयी स्थान न प्राप्त करने के पीछे बहुत हद तक भारतीय संसद और सरकारें जिम्मेदार है. संसद और राष्ट्रपति यदि चाहें तो हिन्दी किसी भी समय अपना गौरवमयी राजभाषा का स्थान प्राप्त कर सकती है.

पारशियों के ग्रंथ 'अबस्ता' में हिन्दू शब्द का प्रयोग हुआ है. पारशियों के गाथा ग्रंथ 'शतीर' में भी बड़े आदर भाव से 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग हुआ है. शतीर की 163 वीं आयत में लिखा है 'गस्ताशय जरतस्त ख्वाद' अर्थात् जब व्यास नामक भारतीय बल्ख की राजधानी में पहुंचा तो राजा गस्ताशय को व्यास ने अपना परिचय इस प्रकार दिया- 'मन भरदे अम हिन्द जिजाद' अर्थात् मैं हिन्द देश में उत्पन्न हिन्दू हूँ.

हिन्दी भारत की राजभाषा तो घोषित है, परन्तु इसे आजादी के 71 साल बाद भी अपना स्थान प्राप्त नही हो सका है. हिन्दी को अपना गौरवमयी स्थान न प्राप्त करने के पीछे बहुत हद तक भारतीय संसद और सरकारें जिम्मेदार है. संसद और राष्ट्रपति यदि चाहें तो हिन्दी किसी भी समय अपना गौरवमयी राजभाषा का स्थान प्राप्त कर सकती है.

संविधान निर्माण के समय तात्कालीन परिस्थितियों और ऐतिहासिक कारणों से संविधान के अनुच्छेद 343(1) में हिन्दी को राजभाषा घोषित करते समय उच्चस्तर की न्याय पालिका के कार्य कलाप के लिए अंग्रेजी को ही जारी रखने का प्रावधान किया गया. अनुच्छेद 343(2) और (3) में कहा गया कि 15 वर्षो की अवधि तक संघ कि उन शाासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा, जिनके लिए उसका प्रारम्भ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था, परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान आदेश द्वारा संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेंगे और संसद उक्त 15 वर्षो की अवधि के पश्चात् विधि द्वारा अंग्रेजी भाषा का ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग का उपबन्ध कर सकेगी जो ऐसे विधि

में विनिर्दिष्ट किए जाएं. इसी प्रावधान के अन्तर्गत ही राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया था. दूसरी ओर उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के बारे में अनुच्छेद 348 और 349 में जो प्रावधान किए गए उनमें कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की गई.

संविधान के अनुच्छेद 348 में उच्चतम और उच्च न्यायालयों हेतु निम्नलिखित उपबन्ध किये गये हैं-उच्चतम और उच्च न्यायालयों में प्रयोग कि जाने वाली भाषा के लिए अनुच्छेद 348(1) में कहा गया है कि किसी बात के रहते हुए भी जब तक संसद विधि द्वारा उपबन्ध न करे तब तक (क) उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालयों में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होगी. (ख) संसद के प्रत्येक सदन या राज्य के विधान मण्डल के सदन या प्रत्येक सदन में पुर्नस्थापित किये जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उन संशोधनों के संसद या किसी राज्य के विधान मण्डल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के और इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान मण्डल द्वारा बनाई गई किसी के अधीन जारी किये गये सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपनियमों के प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे.

इस प्रकार देखा जाए तो हिन्दी को राजभाषा का गौरवमयी स्थान प्राप्त कराने की जिम्मेदारी भारत की संसद, राज्य विधान मण्डलों, राष्ट्रपति तथा राज्यपालों पर संविधान द्वारा छोड़ दिया गया है. परन्तु संविधान के अनुच्छेद 349 में निर्धारित कतिपय शर्तो के लागू होने के 71 वर्ष बाद भी कोई ऐसा संशोधन नही किया गया है. सविधान के अनुच्छेद 344 के प्रावधान के अनुसार 1955 में राजभाषा आयोग का गठन किया गया और फिर उसकी रिपोर्ट पर अपनी राय देने के लिए एक संसदीय समिति भी गठित की गई. समिति ने अपनी रिपोर्ट 8 फरवरी 1959 को राष्ट्रपति को सौंपी. आयोग और समिति दोनों की राय थी कि 1965 के बाद अंग्रेजी को सहभाषा के रूप में जारी रखा जाए, क्योंकि यह देश के लिए अधिक सुविधाजनक है. विशेष रूप से अहिन्दी भाषी जनता के लिए. राजभाषा आयोग ने न्यायपालिका के बारे में राय दी कि सर्वोच्च न्यायालय की सभी कार्यवाहियां और अभिलेख जैसे निर्णय और आदेश आदि एक ही भाषा में होंगे और वह भाषा हिन्दी ही होगी. हिन्दी में ही अपील, वकीलों द्वारा बहस व आदेश होंगे. 1957 में गठित संसदीय समिति ने आयोग की इस सिफारिश को स्वीकार भी कर ली. विधि आयोग द्वारा 1958 में सरकार को प्रस्तुत की गई अपनी 14 वीं रिपोर्ट में भी उच्चतम और उच्च न्यायालयों की कार्यवाही हिन्दी में ही होने की वकालत की थी. परन्तु अब तक उच्चतम और उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी में ही बहस व निर्णय दिये जा रहे है. वर्तमान में राजस्थान, मध्य प्रदेश, इलाहाबाद, पटना उच्च न्यायालयों में ही उन प्रदेशों के राज्यपालों ने अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी निर्णय देने के आदेश दे रखे है.

हिन्दी दिवसः

शिक्षक : हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, इसका हमें सम्मान करना चाहिए. हमें इसको मजबूत बनाने में अपना अमूल्य योगदान देना चाहिए?

छात्रः गुरूजी! आपने ही तो कहा था कि हिन्दी पढ़ के क्या करोगे, छोड़ो हिन्दी का क्लास और आ जाओ प्रयोगशाला में. आपकी कौन सी बात सही है आज वाली या पहले वाली

-दाऊजी

हिंदी के सामने असली चुनौतियाँ

डॉ० शिबन कृष्ण रैणा
अलवर, राजस्थान

हिंदी-दिवस अथवा हिंदी-सप्ताह या फिर हिंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है. सरकारी कार्यालयों में, शिक्षण-संस्थाओं में, हिंदी-सेवी संस्थाओं आदि में हिंदी को लेकर भावपूर्ण भाषण व व्याख्यान, निबन्ध-प्रतियोगिताएं, कवि-गोष्ठियां पुरस्कार-वितरण आदि समारोह धडल्ले से हो रहे हैं. नयी सरकार ने चूंकि हिंदी के रथ पर सवार होकर ही गढ़ जीता है, अतः उसका आशीर्वाद भी इस भाषा को मिलेगा. मगर प्रश्न यह है कि इस तरह के आयोजन पिछले साठ-सत्तर सालों से होते आ रहे हैं, क्या हिंदी को हम वह सम्मानजनक स्थान दिला सके है जिसका संविधान में उल्लेख है या जिसकी कामना हिंदी जगत को है?

भाषण देने, बाजार से सौदा-सुलफ खरीदने या फिर फिल्म/सीरियल देखने के लिए हिंदी ठीक है, मगर कौन नहीं जानता कि वैश्वीकरण के इस दौर में अच्छी नौकरियों के लिए या फिर उच्च्य अध्ययन के लिए अब भी अंग्रेजी का दबदबा बन हुआ है. इस दबदबे से कैसे मुक्त हुआ जाय? निकट भविष्य में आयोजित होने वाले हिंदी-आयोजनों के दौरान इस पर भावुक हुए विना वस्तुपरक तरीके से विचार-मंथन होना चाहिए. निजी क्षेत्र के संस्थानों अथवा प्रतिष्ठानों में हिंदी की स्थिति सोचनीय बनी हुई है और मात्र कमाने के लिए इस भाषा का वहां पर 'दोहन' किया जा रहा है? इस प्रश्न का उत्तर भी हमें निष्पक्ष होकर तलाशना होगा.

यों देखा जाय तो हिंदी-प्रेम का मतलब हिंदी विद्वानों, लेखकों, कवियों आदि की जमात तैयार करना कदापि नहीं है. हिंदी-प्रेम का मतलब है हिंदी के माध्यम से रोजगार के अच्छे अवसर तलाशना, उसे उच्च्य-अध्ययन खास तौर पर विज्ञान और टेक्नोलॉजी की पढ़ाई के लिए एक कारगर माध्यम बनाना और उसे देश की अस्मिता व प्रतिष्ठा का सूचक बनाना. कितने दुःख की बात है कि हिंदी दिवस तो पसरते जाते हैं, मगर खुद हिंदी सिकुड़ती जा रही है. कहने को तो आज इस देश में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है किन्तु स्थिति भिन्न है. चाहे विश्वविद्यालयों या लोकसेवा आयोगों के प्रश्न-पत्र हों, या फिर सरकारी चिट्ठी-पत्री, मोटे तौर पर राज-काज की मूल प्रामाणिक भाषा अंग्रेजी ही है. रैपिड इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स के सर्वव्यापी विज्ञापन और कुकरमुत्ते की तरह उगते इंग्लिश मीडियम के स्कूल अंग्रेजी के साम्राज्य का डंका बजाते दीख रहे है. जहां-जहां अभिलाषा या जरूरत है वहां-वहां अंग्रेजी है. दरअसल, इन पैंसठ-सत्तर सालों में सत्ता का व्याकरण हिंदी में नहीं अंग्रेजी में रचा जाता रहा है. सता के केंद्र में बैठे लोग औपचरिकतावश हिंदी का समर्थन करते रहे, अन्यथा भीतर से मन उनका अंग्रेजी की ओर ही झुका हुआ था. हिंदी की ओर होता तो शायद आज हिंदी को लेकर परिदृश्य ही दूसरा होता.

हिंदी-प्रेम का यह मतलब नहीं कि हिंदी विद्वानों, लेखकों, कवियों आदि की जमात तैयार की जाए. हिंदी-प्रेम का मतलब है हिंदी के माध्यम से रोजगार के अच्छे अवसर तलाशना, उसे उच्च्य-अध्ययन (विज्ञान और टेक्नोलॉजी) की पढ़ाई के लिए एक कारगर माध्यम बनाना और उसे देश की अस्मिता व प्रतिष्ठा का सूचक बनाना.

पहले कहा जा चुका है कि किसी भी भाषा का विस्तार, उसकी लोकप्रियता या फिर उसका वर्चस्व तब तक नहीं बढ़ सकता जब तक कि उसे 'जरूरत' यानी 'आवश्यकता' से नही जोड़ा जाता. यह 'जरूरत' अपने आप उसे विस्तार देती है और लोकप्रिय बना देती है. हिन्दी को इस 'जरूरत' से जोड़ने की बहुत आवश्यकता है. हिन्दी की तुलना में 'अंग्रेजी' ने अपने को इस 'जरूरत' से हर तरीके से जोड़ा है. जिस निष्ठा और गति से हिन्दी और गैर-हिन्दी प्रदेशों में हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य हो रहा है, उससे दुगुनी रफ्तार से देश-विदेश में अंग्रेजी माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के नये-नये क्षितिज उद्‌घाटित हो रहे हैं जिनसे परिचित हो जाना आज हर व्यक्ति के लिए लाजिम भी हो गया है. मेरे इस कथन से यह अर्थ कदापि न

निकाला जाए कि मैं अंग्रेजी की वकालत कर रहा हूँ. मैं सिर्फ यह रेखांकित करना चाहता हूं कि अंग्रेजी ने अपने को उस जरूरत से जोड़ा है जो अच्छी नौकरी देती है, प्रतिष्ठा देती है या फिर ज्ञान-विज्ञान की नई खिड़कियाँ हमारे लिए खोलती हैं. इस बात को भी हमें स्वीकार करना होगा कि अंग्रेजी ने अपने को मौलिक-चिंतन, मौलिक-अनुसंधान व सोच तथा ज्ञान-विज्ञान के अथाह भण्डार की संवाहिका बनाया है जिसकी वजह से पूरे विश्व में आज उसका वर्चस्व अथवा दबदबा बना हुआ है. हिन्दी अभी 'जरूरत' की भाषा नहीं बन पाई है. हमें इस बात का जवाब ढूंढना होगा कि क्या कारण है अब तक उच्च अध्ययन खास तौर पर विज्ञान और टेकनालॉजी, चिकित्साशास्त्र, प्रबंधन आदि के अध्ययन के लिए हम हिंदी में स्तरीय/मौलिक पुस्तकें तैयार नहीं कर सके हैं? क्या कारण है कि एनडीए, सीडीएस, बैंक प्रोबेशनरी ऑफिसर्स टेस्ट, कैट आदि परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं के लिए हम हिन्दी को एक विषय के रूप में सम्मिलित नहीं करा सके हैं? क्या कारण है कि आईआईटी, पीएमटी आदि परीक्षाओं में अंग्रेजी एक विषय है, हिन्दी नहीं है? ऐसी अनेक बातें हैं जिनका उल्लेख किया जा सकता है. यह सब क्यों हो रहा है? अनायास हो रहा है या जानबूझकर किया जा रहा है, इन बातों पर खुल कर चर्चा होनी चाहिए. जैसा कि पूर्व में लिखा जा चुका है कि हिन्द्र प्रचार-प्रसार या उसे अखिल भारतीय स्वरूप देने का मतलब हिन्दी के विद्वानों, लेखकों, कवियों या अध्यापकों की जमात तैयार करना नहीं है. जो हिन्दी से सीधे-सीधे आजीविका या अन्य तरीकों से जुड़े हुए हैं, वे तो हिन्दी के अनुयायी हैं ही. यह उनका धर्म है, उनका नैतिक कर्तव्य है कि वे हिन्दी का पक्ष लें. मैं बात कर रहा हूं ऐसे हिन्दी वातावरण को तैयार करने की जिसमें भारत देश के किसी भी भाषा-क्षेत्र का किसान, मजदूर, रेल में सफर करने वाला हर यात्री, अलग अलग काम-धन्धों से जुड़ा आम-जन हिन्दी समझे और बोलने का प्रयास करे. टूटी-फूटी हिन्दी ही बोले, मगर बोले तो सही. यहां पर मैं दूरदर्शन और सिनेमा के योगदान का उल्लेख करना चाहूंगा जिसने हिन्दी को पूरे देश में लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. कुछ वर्ष पूर्व जब दूरदर्शन पर 'रामायण' और 'महाभारत' सीरियल प्रसारित हुए तो समाचार पत्रों के माध्यम से सुनने को मिला कि दक्षिण भारत के कतिपय अहिन्दी भाषी अंचलों में रहने वाले लोगों ने इन दो सीरियलों को बड़े चाव से देखा क्योंकि भारतीय संस्कृति के इन दो अद्भुत महाकाव्यों को देखना उनकी भावनागत जरूरत बन गई थी और इस तरह अनजाने में ही उन्होंने हिन्दी सीखने का उपक्रम भी किया. हम ऐसा ही एक सहज सुन्दर और सौमनस्यपूर्ण माहौल बनाना चाहते हैं जिसमें हिन्दी एक जरूरत बने और उसे जन-जन की वाणी बनने का गौरव उसे प्राप्त हो.

एक बात और. हिंदी प्रचार-प्रसार सम्बन्धी कई राष्ट्रीय संगोष्ठियों में मुझे सम्मिलित होने का सुअवसर मिला है. इन संगोष्ठियों में अक्सर यह सवाल अहिन्दी-भाषी हिंदी विद्वान करते हैं कि हम तो हिंदी सीखते हैं या फिर हमें हिंदी सीखने की सलाह दी जाती है, मगर आप लोग यानी हिंदी भाषी क्षेत्रों के लोग हमारे दक्षिण भारत की एक भी भाषा सीखने के लिए तैयार नहीं हैं. यह रटा-रटाया जुमला मैं कई बार सुन चुका हूँ और आखिर एक सेमिनार में मैंने कह ही दिया कि दक्षिण की कौनसी भाषा आप लोग हम को सीखने के लिए कह रहे हैं? तमिल/ मलयालम /कन्नड़ या तेलुगु? और फिर उससे होगा क्या? आपके अहम् की संतुष्टि? पंजाबी-भाषी डोगरी सीखे तो बात समझ में आती है. राजस्थानी-भाषी गुजराती सीख ले तो ठीक है. इन प्रदेशों की भौगोलिक सीमाएं आपस में मिलती हैं, अतः व्यापार या परस्पर व्यवहार आदि के स्तर पर इससे भाषा सीखने वालों को लाभ ही होगा. अब आप कश्मीरी-भाषी से कहें कि वह तमिल या उडिया सीख ले या फिर पंजाबी-भाषी से कहें कि वह बँगला या असमिया सीख ले (क्योंकि इस से भावात्मक एकता बढेगी) तो आप ही बताएं यह बेहूदा तर्क नहीं है तो क्या है? इस तर्क से अच्छा तर्क यह है कि अलग-अलग भाषाएँ सीखने के बजाय सभी लोग हिंदी सीख लें ताकि सभी एक दूसरे से सीधे-सीधे जुड़ जाएँ. वह भी इसलिए क्योंकि हिंदी देश की अधिकाँश जनता समझती-बोलती है.

पाखंड

-डॉ० अरुण कुमार आनंद,
मुरादाबाद, उ०प्र०

भारतवर्ष के असम और अरूणाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में बोली जाने वाली टॉका भाषा और लिखी जाने वाली टॉक डी लीपि को टॉकड़ी परंपरा प्राचीनकाल से ही सर्वप्रचलित चली आ रही है. संभवतः इसीलिए वहां परिष्कृत एवं विधवा महिलाओं को टॉकड़ी कहा जाता है. टॉकड़ी का सर्व अर्थ है घूमंतु. बाऊल प्रजाति की नृत्यांगना टॉकड़ी सौन्द्रयता परिपूर्ण नवयुवती यदि भरे बाजार गली कूचों से गुजरती है पुरूषों का वशिभूत होना स्वाभविक ही है उसे टकुरिया कहकर सबोधित किया जाता है. टकुरियां का पहाड़ी अर्थ है कोठो पर रहने वाली तवायफें, कलान्तर में आकर यह टकुरिया शब्द टुकरिया टोकरी में परिवर्तित हो गया. अर्थात! कूड़ा-करकट मलबा उठाने का पात्र रियासती रजवाड़ो के युग काल में कला मनीषियों कवि गायक साहित्य सृजक विशेषज्ञों को सम्मानपूर्वक राजा के बगल में सिहासन पर विशेष प्रकार का मुकुट ताज पहनाकर बिठा दिया जाता था. वर्तमान में कवियों, गीत-संगीतकारों, साहित्यकारों को बे अर्थ का मनुष्य समझकर टोकारियॅा में बिठा दिया जाता है अर्थात् कूॅचों में चप्पल घिसने वाले कलम घिस्सुवार लोगों सर्वश्रेष्ठ कला सम्राट साहित्य-महिर्षिमान कर लाखों के सम्मानोपाधि से अलंकृत करने का प्रचलन चल पड़ा हैं हम यहां पर ऐसे ही टॉकड़ी वालों का वर्णन कर रहे है. जिन्हें प्रकाशकगण चटकारे लेकर सुर्खियों में छापते है. तात्पर्य यह कि हिन्दी क्षेत्र में शुद्ध भाषा शैली की जगह खिचड़ी भाषा शैली का महात्मय रूतबा बढ़ गया है. विश्वस्तर पर असहाय निराक्षितो पर अन्याय करने वाले लोग एक ओर अत्याचार-शोषण भ्रष्टाचार शारीरिक मानसिक उत्पीड़न घपला घोटाला को समाप्त करने का आवाहन करते है. वही दूसरी ओर बेआंकठ इन्ही कूकृत्यों में डूबे हुए पाये जाते है, को भी टॉक डीवाल कहा जाये तो अनुचित नही होगा? कुछ समय पूर्व बिलगेटस ने अजीम प्रेमजी जैसे कई उद्योगपतियों द्वारा अपनी आय का एक बड़ा भाग भ्रष्टचारियों को घोटाला काण्डो के अजांम देने के लिए दान देने की घोषणा ने अंकुश लगाने के सारे नियमों को कमजोर कर दिया है, तो भारत के सर्दभ में मैं समझता हूॅ टॉकड़ी भाषा का ही उपयोग करना उचित होगा, निश्चित रूप से राजा से भगवान अपने आप को मानने वालो लोगों के द्वार दान में दी गई रकम निरकुंश होता चला गया, दोनों ही देने और लेने वाले की प्रगति कहां हुई? सारी रकम बीच का सरकारी जमला शहद लगा कर चाट गया. बस आचरण की चर्चा विश्व मीडिया में होनी स्वभाविक थी, इस प्रकार के पतन नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल कर महादान की चर्चा यू भी जीवन में इसलिए भी जरूरी है कि महादान की नैमिकता निरंतर गायब होती जा रही है. दान करने की हैसियत रखने वाले और निरपेक्षता के चलते धर्म का दुनिया के तमाम उद्योगपति चूंकि कलान्तर में उद्योगपतियों द्वारा दिये गये दान का प्राकृतिक एवं स्वभाविक उपयोग नही रहा तो इस महादान से प्रेरणा लेते हुए यह धीरे-धीरे स्वतं ही विलुप्त हो जायेगा.

मगर क्या वजह है कि हमारे हर पीढ़ी में तमाम उम्र हर दूसरे दिन नाखून काटने और सिर मुडांने के बावजूद न तो यह खत्म हो रहे है न ही इनके उगने की गति थम रही है?

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की दृष्टि शायद ठीक ही पड़ी थी कि धर्म और सत्ता में रूतबा हासिल करने व पाखण्ड रचने का पहल अधिक दिखाई देता है. लगभग सभी धर्मशास्त्र हमें यही प्रेरणा देती है कि किसी व्यक्ति या परिवार को दिया गया या दिया जाने वाला दान गुप्त रूप से दिया जाना चाहिए ना कि ढ़ीढोरा पीटकर दिया जाना चाहिए. इसका मुख्य वजह यह है कि दान स्वीकार करने वाला व्यक्ति शर्मिन्दगी या अपमान न समझे अथवा अपमानित न हो.

इस्लाम धर्म परोपकार स्वरूप दान जकात को बंद मुट्ठी से दिए जाने का हिमायती है. एक हाथ से किया गया जकात दूसरे हाथ को भी भनक नही लगनी चाहिए ही शबाब है. परन्तु जो दान परोपकार और परमार्थ की नई परंपरायें स्थापित हो रही है, लगता है शोहरत हासिल करने की परंपरा है. यूॅ कहें कि असहाय मजबूरी के खरीद फरोक का सौदा है या पाखंड ज्यादा है. ना कि समाज सेवा है मजे की बात तो यह है कि आधुनिक युग में अति महत्वकाक्षां से लोभ मोह माया अंहकार से लेकर तमाम मानवीय विकारों को हर मनुष्य में पैदा करके उसे बढ़ावा दिया जाने लगा हैं हिंसा करने के तौर

तरिके और उपाय भी तो आसानी से उपलब्ध है. फलस्वरूप इसका प्रतिशत तो बढ़ना ही है. अवैध धन सम्पत्ति का निस्तारण काले धन को सफेद करने का जरिया धार्मिक एवं राजनैतिक हिंसा के अतिरिक्त दिखावे और पाखंड़ का स्वरूप भी बड़ा सार्वजनिक धर्म के

आचरण में व्यक्ति चरित्रहीन का शिकार भी हुआ यह बात लोगों के जहन में घर कर गया कि सरकारी मुलजिमों को खरीदा जा सकता है.

मैं अपने इस व्यगं रचना में किसी घोटाले या राजनेता के विशेष का नाम प्रगट न करके इसे सामान्य करते हुए व्यंगय कर रहा हूँ जिससे कैलेन्ड़र की तारिख इस मेरे व्यंग का पुराना न कर दे.

घपला-घोटाला कहां नही है इनका क्या है, औसत में दो की दर से उच्चस्तरीय घोटाले होते रहते है जो मीडिया के लिए चटाकेदार मसाला होता है. राजनेताओं की मजम्मत करने के साथ-साथ अपने बनाने-चलाने और पालन-पोषण करने वालों की मरम्मत करने में भी किसी से कमतर नहीं है. जो टॉकड़ी शतरंज की बाजी चली जाती है जो पत्र-पत्रिकाओं के लिए सन्सनी खेज स्कूप स्टोरी बन सकते है जिनमें सरकार को हिलाने का दम होता है, जो भले ही स्वयं न हिल पाते हो.

मेरा तात्पर्य उठने-बैठने हिलने-डुलने से है ना, कि ड़डी-झड़ी हिलाने से विरोधी जमात पार्टी को नवजीवन प्रदर्शित करने का मौका भले ना दे संसद में मुक्का तान चिल्लाने का मौका तो देते ही है. सो इस व्यंग को अकाईब रूप में संजोया तो जा ही सकता है. जिसे संपादक चाहे तो छापे या टोकरी में डालकर ढेर पर पटकवा दे यह सामाजिक तत्कालिक प्रासंगिक होगा ही? सामान्य व्यक्ति भी अब यह चाहता है कि यदि उसने सौ-दो सौ रूपये दान दिया है तो नाम टापर में आना चाहिए कि मानसिकता ने उसे भौकने वाला जीव बना दिया है. भौकने और चाटने की भी एक कला होती है. जिसे चटकाऊआ टॉकरी कहा जाता है. हम नही कहते कि ऐसा जीव जख्मों की जमात में होता होगा कि तुम उस

धर्म यज्ञ में शमिल होने वाले वर्ज्ञाथियों व दर्शनार्थियों को पता लगना चाहिए कि अमुक वस्तु दान स्वरूप किसने दिया है. उदाहरण के तौर पर किसी मन्दिर या धर्मस्थल पर कोई एक पत्थर लगवाता है तो उस पर उसका नाम-पता खुदा होना चाहिए की मानसिकता ने उसे दानी श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है. चाहे भले ही वह रकम कालाधन ही क्यों न हो? गोरे काले का यह संघर्ष तो पृथ्वी में प्राचीन काल से ही चला आ रहा है. रगड़ा लगाकर यह तो देश के महान्तम टॉकडीदारों की एक झलक अब जरा गौर करिये इन दिनों गरीब कन्याओं का सामूहिक विवाह संस्कार आयोजन का भूत राष्ट्रव्यापि स्तर पर परवान चढ़ रहा है. यदि दुल्हा दुल्हिन के नाम चेहरों को सार्वजनिक करने का प्रचलन निश्चित रूप से सराहनीय व प्रशंसनिय विषय है.

इसे और बढ़ावा दिये जाने की जरूरत है. सर बाईबल ऑफ फिटेस्ट के सिद्धान्त को ध्यान में रखे तो हम सहज ही समझ सकते है तमाम कोशिशों के बावजूद जिस तरह से समाज पर अनेकता का बुखार दिन दूनी रात चौगनी गति से चढ़ता जा रहा है, उसे देखते हुए हमारा मानना है कि अब समय आ गया है. आदमी को जनखा बनाने का सरकार और नेताओं ने यह मुहिम कई योजनाओं और स्तर से चलाना शुरू भी कर दिया है विश्व गुरू भारत को अब भ्रष्टाचार के पक्ष में खुलकर सामने आ जाना चाहिए? और दुनिया को भ्रष्टाचार के लाभ बताना चाहिए उन्हें समझना चाहिए कि कैसे सरकारी विभागों में टॉकड़ी लीपि में काज होता है. पारदर्शिता का समय आ गया है, तो सब कुछ पारदर्शिक ही होना चाहिए. विज्ञापन बाला और फिल्मी नाटिकांए पारदर्शी होती जा रही है. इन्हें 'चोली के पीछे क्या हैं' गीत से कोई ऐतराज नही है. चोली के पीछे और घाघरे के नीचे क्या वह दुनिया को जानकारी है, तो फिर पारदर्शी होने में शर्म हया कैसी? पारदर्शिता के इस युग में अनैतिकता को स्वीकार करने में हर्ज ही क्या है? आखिर आग तो कही न कही बुझेगी ही? चाहे अहंकार की आग हो या दैविक आग हो उसे तो बुझाना ही है. हमारे देश के एक भूतपूर्व प्रधानमंत्री ने स्वीकार किया है कि सरकार का एक रूपया गांव तक पहुॅचते-पहुॅचते दस पैसा रह जाता है. बाकी सब सरकारी जमूरों में गायब हो जाता है कि चिंता किसी देशभक्त को नहीं है? भ्रष्टाचार देश में पनप रहा है. लोग भ्रष्टाचार को बुरी नजर से देखते कोसते रहते है, रिश्वत लेना देना मूल रूप से भ्रष्टाचार की जड़ है. किंतु रिश्वत लिए दिए बिना भी तो लोगों का काम नही चलता सरकारी दफ्तरों में, अदालतों में, थानों में काम का बोझ इतना अधिक है कि हर आदमी का कार्य तुरन्त कर देना संभव ही नही है. हर आदमी अर्जेन्ट काम चाहता है, बिना भेंट पूजा के कैसे संभव है? अब तो अखबार वाले भी बिना भरे पूजा के कुछ नहीं छापते तो शेष क्या बचता है. यह देश की जनता को भली-भांति

समझ लेना चाहिए. बचपने में हजारी प्रसाद द्विवेदी का एक लेख पढ़ा था. 'नाखून क्यों बढ़ता है?' उन्होंने स्वयं लेख में अपनी लेखनी से प्रश्न किया था. मनुष्यों में पशुता क्यों विद्यमान है! यह मात्र एक सांकेतिक प्रमाण है. नाखून का उपयोग लेखक में प्रतीक रूप में किया गया था. उनके इस लेख को अक्षरशः समझ पाना कठिन ही नही असंभव था. विद्यालय के प्राचार्य द्वारा गहराई से समझाने पर यह लेख प्रभावित कर गया था. इसके बाद ही हिन्दी भाषा के लेखकों में प्रतीकात्मक

शैली में लिखने का प्रचलन चल पड़ा था. आज मैं इसे और बेहतर ढंग से समझ पा रहा हूँ कि श्रेष्ठ रचना वही होती है जिसकी विषय वस्तु प्रतीकात्मक शैली में लिखी गई हो. इस मूल बिंदू को थोड़ा विस्तार दें तो मनुष्य के पूर्वज बानर थे. बानरों में पशुता की एक निर्धारित सीमा होती है, आज आदमी उस सीमा को लॉघकर बहुत आगे जा चुका है, से पीछे मुड़कर देखना संभव नही हैं.

कुछ हद तक विज्ञान भी इससे सहमत है ऐसी मान्यता हैं कि मानव में पहले पूंछ हुआ करती थी यदि बिना लाइन में लगे घर बैठे लोगों का काम भेट पूजा के द्वारा हो जावे तो इससे हर्ज ही क्या हैं कि अनैतिकता कैसे कहा जा सकता है? इसके लिए कुछ सुविधा शुल्क भी चुकाना पड़े तो बुरा क्या है?, को हमने भ्रष्टाचार को व्याभिचार नाम दे दिया है. देने वाला राजी और लेने वाली राजी तो मुल्ला के पेट में क्यों दर्द होता है. स्कूल कॉलेज में एडमिशन का मसला हो या नौकरी का पचड़ा नियम कानून की पूंछ पकड़कर बैठे रहना कहां की समझदारी है. परीक्षा और साक्षात्कार ही देते रहेगे, बिना भेट पूजा के कुछ भी हासिल होने वाला नही है. ऊपर की कमाई से ही सरकारी मुलजिम मुर्ग मुस्ल्लम कहां से उड़ा लेगे. वेतन के साथ मुफ्त का शराब-कबाब-शबाब भी तो चाहिए होता है. यदि हम उसे भ्रष्ट कुकृत्यज्ञ की उपाधि से नवाजने लगे तो आम आदमी का अर्जेन्ट काम कौन करेगा? इस अनैतिक काम में हम सब भी तो शमिल है. सभी धर्म जाति-पाति रिश्ते नाते आज तुला में रूपयों से तुले जा रहे है, तो समाज सेवा परमार्थ परोपकार कर्म पीछे क्यों रहे, को भ्रष्ट अनैतिक की संज्ञा देना क्या अनुचित है? प्राचीनकाल से ही वह सौदागिरी तो नियमित होता आ रहा है. जब मानोवंछित फल मिल रहा है, तो आदमी मुर्ख थोड़े ही है जो भ्रष्ट देवता को प्रसाद नही चढ़ायेगे? इस प्रक्रिया को जो लोग अनैतिक भ्रष्टाचार मानते है वे स्वयं अनैतिक है. वे समयानुसार सांमजस्य न बैठा पाने वाले लोग है, तो असफल तो होगें ही? तड़का लगाकर अन्ना जी भ्रष्टाचार उनमूलन का झंड़ा उठाए फिर रहे है और केजरीवाल ने राजनीतिक डंडा घुमाना शुरू कर दिया है. बाबा राम देव कालाधन का राग अलाप रहे है किंतु क्यों भ्रष्टाचार का जिन्दा हैं, क्यों जनता को दिखाई नही देता है?

हमें तो सड़क पर बेवजह भौंकते कुत्ते ही कुत्ते दिखाई दे रहे हैं. यदि आदमी का दुःख दूर हो जाये उसकी समस्या का समाधान हो जावे तो लाल टोपी धारक कुत्ते को कुछ दे देवे तो क्या हर्ज होगा? तो भी भ्रष्टाचार के विरूद्ध झंड़ा-डडा उठाने वालो के पेट में दर्द होने लगता है? कुत्तों का सरदार कहता हैं कि भ्रष्टाचार अनैतिक तो है नहीं इससे हानी भी नहीं होती लाभ ही लाभ है. जो सरकारी काम वर्षो नहीं होता कुछ ले देकर चुटकी में हो जाता है. आपस में परस्पर प्रेम और मित्रता बढ़ती है, सरकारी काम करवाने में सुगमता होती है.

निश्चिन्ता बनी रहती है सब एक दूसरे की चिंता करते है, सदभाव पनपता है, जीवन एक शैली बन जाती है, तो फिर अनियमिता व अनैतिकता कैसी? इस व्यवस्था में आनन्द ही आनन्द है. रूकी हुई फाईल सुपरफास्ट बनकर दौड़ पड़ेगी. कितने ही घोटालेकारों को कोई पूछने वाला नहीं होगा. मीडिया भी चुप्पी साधकर समाधी में बैठ जायेगा. तो फिर हाय-तौबा कैसा? ना जाने इस पुनित परमार्थ कर्म को किसने भ्रष्टाचार नाम दे दिया.

गीता का ज्ञान गांठ बांध लो क्या साथ लाये थे क्या साथ ले जाओंगे? जब सब हमाम में नंगे हैं तो फिर शर्म कैसी? जब देश की सारी व्यवस्था सरकार करती है, दारू, गुटका, बीड़ी सिगरेट और जुआ सट्टा के कारखाने खुलवाने का लाइसेंस देती है. बाजार में खुले आम मार्केटिंग हो रही है तो यौन तृप्ति की समुचित व्यवस्था सरकार क्यों नहीं करती?

लोगों के सिर कुचल कर किसी भी तरह ऊपर चढ़ा जा सकता है. एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ मची हैं, तो हुडदंग में लोग मरेंगे ही? इधर कुछ समय से समाज और परिवार के संवेदनशील और प्रिय संबधों-रिश्तों के बीच मची मारकाट ने मानवता की सारी सीमाएं तोड़ दी है, को देख सम्भवतः संस्कृति भी अपना सिर शर्म से झुका लेती है.

दूसरों की पीड़ा अथवा आवश्यकता को अनुभव करने वाला ही वास्तव में मनुष्य कहलाने का अधिकारी होता है

-सीताराम गुप्ता,
पीतमपुरा, दिल्ली

एक सेठ की दुकान के बाहर कुछ मज़दूर काम कर रहे थे. तभी एक प्यासा मज़दूर दुकान के अंदर गया और मालिक से बोला, ''सेठजी प्यास लगी है थोड़ा पानी पिला दो.'' सेठजी ने कहा कि अभी मेरे पास कोई आदमी नही है और ये कहकर अपने मोबाइल पर लग गया. प्यासा आदमी पानी की तलाश में आसपास गया पर कही पानी नही मिला. कुछ देर बाद वह लौट आया और दुकान के मालिक से फिर बोला, ''सेठजी सचमुच बहुत प्यास लगी है थोड़ा पानी पिला दो. '' सेठजी ने कहा कि अभी बोला था न कि कोई आदमी नही है. प्यासे आदमी ने कहा, ''सेठजी थोड़ी देर के लिए आप ही आदमी बन जाइए न.'' इस दृष्टांत को कई जगह कई बार पढ़ने का अवसर मिला. हर बार इस दृष्टांत ने कुछ सोचने पर मजबूर किया. थोड़ी देर के लिए आप ही आदमी बन जाइए इन शब्दों में कितना गहरा अर्थ छुपा हुआ है. इंसानियत की इससे अच्छी व्याख्या क्या हो सकती है? हमारे आर्श ग्रंथों में जगह-जगह लिखा है मनुर्भवः मनुष्य बन. क्या हम सचमुच मनुष्य नही हैं? मनुष्य किसे कहते हैं? यदि हम मनुष्य नही है तो फिर मनुष्य बनने का क्या उपाय है?

मनुष्य वास्तव में अपने कर्मो अथवा कार्यो से जाना जाता है. जैसे कर्म वैसा मनुष्य. अच्छे कर्म अच्छा मनुष्य और बुरे कर्म तो बुरा मनुष्य. दूसरे यह भी अनिवार्य है कि मनुष्य कर्म करे अकर्मण्य न रहे. कर्म भी उपयोगी हो. कर्म निष्काम हो तो इससे तो अच्छी कोई बात ही नहीं. मनुष्य में जब इन विशेषताओं का हास होता है तो उसकी मनुष्यता ही प्रभावित होती है. हम प्रायः अपनी हैसियत के मुताबिक़ अपने कार्यो को निश्चित कर लेते है. जब हम किसी बड़े पद पर आसीन अथवा बहुत दौलतमंद हो जाते है तो सोचते है कि अब छोटे-मोटे कार्य करना हमारे लिए सम्मानजनक नही. छोटे-मोटे कामों को करने के लिए तो बहुत से लोग मिल जाएंगे. प्रश्न उठता है कि क्या छोटे-मोटे कार्यो को ठीक से परिभाषित करना संभव भी है? ये ठीक है कि हम अपनी हैसियत के अनुसार कार्य करते है. इसमें कोई दोष भी नही. लेकिन कुछ कार्य निश्चित रूप से ऐसे होते है जो बेशक छोटे दिखते हो लेकिन छोटे होते नही है. इन कार्यो को हमारे लिए अन्य कोई कर भी नही सकता. करेगा भी तो उसका वास्तविक लाभ हमे नहीं मिल पाएगा.

''सेठजी सचमुच बहुत प्यास लगी है थोड़ा पानी पिला दो.'' सेठजी ने कहा कि अभी बोला था न कि कोई आदमी नही है. प्यासे आदमी ने कहा, ''सेठजी थोड़ी देर के लिए आप ही आदमी बन जाइए न.''

सोचने की बात है क्या हमारे बदले में हमारी जगह कोई किसी से प्रेम कर सकता है? संभव ही नही. जब हम ऐसा कोई कार्य करेंगे ही नही तो उसका आनंद व उस आनंद से प्राप्त लाभ भी हमें नही मिल पाएगा. जब हम ऐसे ही कार्यो को करवाने के लिए दूसरों का मुँह ताकने लगते है तो हमारा धर्म, हमारी नैतिकता व हमारी स्वाभाविकता अर्थात् हमारी मनुष्यता ही डगमगाने लगती है. अब पानी पिलाने की बात ही ले लीजिए. किसी को एक गिलास पानी दे देना कोई बड़ी बात नही लेकिन किसी प्यासे को पानी पिलाने से बड़ा धर्म ही नही. इस कार्य को करने से जो संतुष्टि मिलती है वो अद्वितीय होती है. यदि हम ये कार्य किसी और से करवाते है अथवा नही करते है तो हम उस आनंद से वंचित ही रह जाते है. जो भी अच्छे कार्य होते है अथवा जिनमें धार्मिक होने का भाव निहित रहता है वो वास्तव में मनुष्य के स्वयं के उत्थान के लिए होते है. हम उन कार्यो की उपेक्षा करके कहने को तो हम मनुष्यता से वंचित हो जाते है लेकिन वास्तव में अपने मूल स्वरूप से कटकर अपने आध्यात्मिक विकास को ही अवरुद्ध कर लेते है. हमारे साथ एक विवशता कहिए अथवा विडंबना कहिए ये होती है कि हम वो बड़े-बड़े कार्य ही करना चाहते है जो औरो का ध्यान आकर्षित कर सकें अथवा जिनसे हमें यश की प्राप्ति हो सके. इसीलिए कई लोग लाखों रुपए ख़र्च करके बड़े-बड़े भंडारे तो लगवाते

रहते हैं लेकिन यदि कोई भूखा-प्यासा उनसे सीधे रोटी या पानी मांग ले तो उनका व्यवहार बदल जाता है. किसी दुखी व्यक्ति को देखकर उनके मन में पीड़ा उपजने के स्थान पर क्रोध का भाव उत्पन्न होने लगता है. अपने कर्मचारियों अथवा सेवकों की आवश्यकताओं के प्रति पूर्णतः असंवेदनशील बने रहते है. किसी भूखे-प्यासे अथवा दुखी व्यक्ति को देखकर उसकी मदद करने की बजाय उसे दुत्कारने तक से वो परहेज नहीं करते. इसी का अभाव अथवा नकारात्मक भावों से मुक्ति ही है वास्तविक मनुष्य बनना या होना. यदि हम काल्पनिक प्रतिष्ठा अथवा यश की कामना से रहित होकर फ़ौरन किसी की मदद करने का संकल्प ले लें तो न केवल अधिक मानवीय हो सकेंगे अपितु हमारा वास्तविक आध्यात्मिक विकास भी संभव हो सकेगा. उर्दू शायर 'चकबस्त' ने कितना सही कहा है :

दर्दे-दिल पासे-वफ़ा जज़्बा-ए-ईमां होना,
आदमीयत है यही और यही इंसां होना।

लघु कथा प्रतियोगिता-2019

इस प्रतियोगिता में देशी-विदेशी कोई भी हिन्दी सेवी सहभागी हो सकता है. यह प्रतियोगिता तीन चरणों में सम्पन्न होगी. अंतिम चरण में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी को रुपये 5000/ प्रदान किए जाएंगे. अंतिम चरण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा। सभी प्रतिभागियों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित भी किया जा सकता है. कृपया फोन कर जानकारी न मांगे, अणुडाक(ई-मेल) या व्हाटसएप पर आवेदन करें पूरा विवरण नियम एवं शर्तो सहित प्रेषित कर दिया जाएगा.

नियम एवं शर्ते

01 प्रतिभागी को एक लघुकथा जिसकी शब्द सीमा अधिकतम 300(तीन सौ शब्दों) से अधिक की न हो मौलिकता के प्रमाण पत्र के साथ भेजनी होगी.

02 प्रथम चरण में इन लघुकथाओं को एक पुस्तकाकार में प्रकाशित किया जा सकता है. जिसकी एक प्रति साधारण डाक से प्रतिभागी को भी भेजी जाएगी.

03 पाठकों की राय के आधार पर सर्वश्रेष्ठ दस का चयन किया जाएगा. जो द्वितीय चरण के प्रतिभागी होगें.

04 द्वितीय चरण के प्रतिभागियों की लघुकथा को पाठकों की राय एवं तीन सदस्यीय निर्णायक मंडल के निर्णय के आधार पर सर्वोच्च एक का चयन किया जाएगा.

05 विजेता को फरवरी 2020 में आयोजित होने वाले 18वें साहित्य मेला के सुअवसर पर यह विजेता का प्रमाण पत्र व निर्धारित राशि प्रदान की जाएगी।

06 प्रतिभागी को लघुकथा के साथ एक फोटो, नाम, पिता का नाम, जन्म तिथि, योग्यता तथा रुपये दो सौ का धनादेश/डीडी, अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी षाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

आवेदन की अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2019

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011
सं0: 9335155949 sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

विशेषः कृपया मोबाइल पर संपर्क ना करें।

* नियम एवं शर्तो में आंशिक परिवर्तन संभव है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' में है विश्व की समस्याओं का समाधान

-प्रदीप कुमार सिंह,
लखनऊ, उ.प्र.

भारत सांस्कृतिक विविधता के कारण एक लघु विश्व का स्वरूप धारण किये हुए है. भारत की सांस्कृतिक विविधता 'वसुधैव कुटुम्बकम' का सन्देश देती है. भारत की महान नारी लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर ने लोक कल्याण की भावना से होलकर साम्राज्य का संचालन हृदय की विशालता, असीम उदारता तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर बड़ी ही कुशलतापूर्वक किया. 70 वर्ष की आयु में अहिल्याबाई की महान आत्मा 13 अगस्त 1795 को नश्वर देह से निकलकर अखिल विश्वात्मा में विलीन हो गयी.

वह भारत की ऐसी प्रथम नारी शासिका थी जिन्होंने अपनी प्रजा को अपनी संतानों की तरह लोकमाता के रूप में संरक्षण दिया. साथ ही अत्यन्त ही लोक कल्याणकारी कानून बनाये जिसमें सभी का हित सुरक्षित था. पड़ोसी राजाओं के साथ उन्होंने मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित किये. वे युद्ध के पक्ष में कभी भी नहीं रही, वरन् वे कानून आधारित न्यायपूर्ण राज संचालन पर विश्वास करती थी. आज भी महारानी के सम्बोधन की बजाय वह लोकमाता या देवी के रूप में सबके हृदय में श्रद्धापूर्वक वास करती है. उन्होंने एक महारानी होते हुए भी एक सादगीपूर्ण, शुद्ध, दयालु तथा ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित हृदय जीवन पर्यन्त धारण किये रहने की मिसाल प्रस्तुत की.

चारों वेदों का एक लाइन में सार है- उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।। उदार चरित्र वाले लोगों के लिए यह सम्पूर्ण धरती ही परिवार है. यह वाक्य विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक तथा युवा भारत की संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित है. भारतीय संविधान में निहित वसुधैव कुटुम्बकम् के विचार को सारे संसार में फैलाना है.

भारत के प्रत्येक नागरिक को वसुधैव कुटुम्बकम पर आधारित वैश्विक लोकतांत्रिक व्यवस्था (विश्व संसद) का गठन करने का लक्ष्य बनाना चाहिए. वर्तमान में विश्व का संचालन पांच

वीटो पॉवर सम्पन्न शक्तिशाली देश अपनी मर्जी से कर रहे है. विश्व को अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, वीटो पॉवर रहित, परमाणु शस्त्रों की होड़ से मुक्त तथा युद्ध रहित बनाने का संकल्प भी हमें लेना है. यह चिन्ता का विषय है कि आम आदमी की प्रसन्नता की रैंकिंग में भारत विश्व में 113वें स्थान पर है जबकि भूखों की सूचकांक में भारत का दर्जा विश्व में 119वां है. 'ग्लोबल विलेज' के रूप में विकसित 21वीं सदी के विश्व समाज में भी अहिल्या बाई के लोक कल्याणी विचार आज भी पूरी तरह सारगर्भित तथा युगानुकूल है.

संसद भवन परिसर में हमारे इतिहास की उन विभूतियों की प्रतिमाएं और मूर्तियां स्थापित की गयी है जिन्होंने राष्ट्र हित तथा लोक कल्याण के लिए महान योगदान दिया है. संसद की गैलरी में लगी लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर की दिव्य मूर्ति भी उनमें से एक है. देवी अहिल्या बाई होल्कर की प्रतिमा का अनावरण भारत के तत्कालीन उप-राष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत द्वारा 24 अगस्त 2006 को किया गया था. भारत सरकार ने उनके सम्मान में डाक टिकट भी जारी करके देश वासियों की ओर से सम्मान प्रगट किया है. देश के कई नगरों के प्रमुख स्थलों पर इनकी मूर्तियां स्थापित की गयी है. देश में कई सामाजिक तथा शैक्षिक संस्थायें अहिल्या बाई होल्कर के लोक कल्याणकारी विचारों को जन-जन में फैलाने के लिए उनके नाम से संचालित है. केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा इनके नाम से कई लोक कल्याणकारी योजनायें चलायी गयी है. भारत के गौरव को बढ़ाने वाली इस महान नारी लोकमाता अहिल्या बाई का जन्म 31 मई, 1725 को औरंगाबाद जिले के चौड़ी गांव (महाराष्ट्र) में एक साधारण परिवार में हुआ था. अहिल्या बाई के जीवन को महानता के शिखर

पर पहुँचाने में उनके ससुर महान यौद्धा मल्हार राव होलकर की मुख्य भूमिका रही है. इन्दौर जिले के आसपास के एक बड़े मालवा क्षेत्र में होल्कर साम्राज्य की स्थापना श्रीमंत मल्हार राव होल्कर ने अपने पराक्रम से की थी. मल्हार राव विशेष रूप से मध्य भारत में मालवा के पहले मराठा सुबेदार होने के लिए जाने जाते थे.

अठारहवीं सदी के मध्य में मल्हारराव होल्कर ने पेशवा बाजीराव प्रथम की ओर से अनेक लड़ाइयाँ जीती थी. मालवा पर पूर्ण नियंत्रण ग्रहण करने के पश्चात, 18 मई 1724 को इंदौर मराठा साम्राज्य में सम्मिलित हो गया था. 1733 में बाजीराव पेशवा ने इन्दौर को मल्हारराव होल्कर को पुरस्कार के रूप में दिया था. मल्हारराव ने मालवा के दक्षिण-पश्चिम भाग में अधिपत्य कर होल्कर राजवंश की नींव रखी और इन्दौर को अपनी राजधानी बनाया. एक दिन महान यौद्धा मल्हार राव होलकर चौड़ी गांव से होकर अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ जा रहे थे. रास्ते में पड़ने वाले शिव मंदिर में विश्राम करने के लिए रूके, वहां उस मंदिर में अहिल्या बाई की सादगी, विनम्रता और भक्ति का भाव देखकर वह काफी प्रभावित हुए. अहिल्या बाई मंदिर में जाकर प्रतिदिन पूजा करती थी. मल्हार राव ने उसी समय उन्हें पुत्र वधु बनाने का निर्णय लिया और सन् 1735 में उनका विवाह खण्डेराव होलकर के साथ सम्पन्न हो गया.

सन् 1745 में पुत्र मालेराव एवं 1748 में पुत्री मुक्ताबाई का जन्म हुआ. मल्हार राव होलकर अपनी पुत्र वधु को अपनी बेटी की तरह ही मानते थे और उन्हें सैनिक शिक्षा, राजनैतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक कार्यो में साथ रखते तथा सहयोग भी करते थे. इसी प्रकार कुशल जीवन व्यतीत हो रहा था कि अचानक 1754 में युद्ध भूमि में खण्डेराव होलकर वीर गति को प्राप्त हुए. अहिल्या बाई उस युग की परम्परा के अनुसार सती होने जा रही थी. इस पर मल्हार राव होलकर ने अपनी पुत्र वधू से अनुरोध किया कि होल्कर साम्राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए सती न हो.

लोकहित को ध्यान में रखकर उन्होंने सती न होकर राज्य के सामाजिक कार्यो में रूचि लेने का निर्णय लिया और सादगीपूर्ण ढंग से होल्कर वंश की सेवा का संकल्प कर 23 अगस्त, 1766 में अपने पुत्र मालेराव का राजतिलक कर दिया. 22 वर्ष की अल्प आयु में ही मालेराव का बीमारी के कारण निधन हो गया. उन्होंने मात्र 10 माह शासन किया अपने पति व पुत्र की मृत्यु को सहते हुए वह प्रजा की सेवा में जीवन पर्यन्त लगी रही.

मल्हारराव होल्कर के जीवन काल में ही उनके पुत्र खंडेराव का निधन 1754 में हो गया था. इसके बाद वयोवृद्ध मल्हार राव का निधन 20 मई 1766 में होने के बाद अहिल्याबाई ने (शासन 1767 से 1795 तक) 28 वर्षो तक राज्य का शासन बड़ी कुशलता से सम्भाला. महल के विलास से दूर रहकर महल के बाहर साधारण ढंग से झोपड़ी में रहकर राज्य का संचालन किया.

मातु अहिल्या बाई होल्कर आध्यात्मिक नारी थी जिनके सद्प्रयासों से सम्पूर्ण देश के जीर्ण-शीर्ण मन्दिरों, घाटों एवं धर्म शालाओं का सौन्दर्यीकरण एवं जीर्णोद्धार हुआ. लोकमाता देवी अहिल्या बाई ने देश भर में सबसे अधिक धार्मिक स्थलों का निर्माण करके अपने राज्य से बाहर देश के कोने-कोने में धर्म के माध्यम से वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश पहुंचाया. नारी शक्ति का प्रतीक महारानी अहिल्या बाई होल्कर द्वारा दिखाये मार्ग पर चलने के लिए विशेषकर महिलाओं को आगे आकर वसुधैव कुटुम्बकम् के विचार को सारे संसार में फैलाने में यथा शक्ति योगदान देना चाहिए.

इसके अतिरिक्त अन्य होलकर शासकों ने भी बहादुरी के साथ सराहनीय कार्य किये. मल्हार राव के दत्तक पुत्र महाराजा तुकोजी राव होलकर ने सामाजिक सुधार के अनेक नियम बनायें. तुकोजी राव की मृत्यु के बाद उनके पुत्र महाराजा यशवंत राव होलकर भी साहसी और पराक्रमी थे. उन्होंने राजा रणजीत सिंह के साथ मिलकर 18 दिनों तक अंग्रेजों से युद्ध किया तथा अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिये. इनका मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी हुकुमत की गुलामी से देश को मुक्ति दिलाना था.

पवित्र गीता में श्रीकृष्ण अपने शिष्य अर्जुन से कहते है, हे अर्जुन! आत्मा को न शस्त्र भेद सकते हैं न अग्नि जला सकती है, न ही इसे वायु सुखा सकती है, न ही इसे दुःख-सुख, क्लेश आदि प्रभावित कर सकते है. अतः तू भली-भांति समझ ले कि आत्मा अजर अमर और अविनाशी है. लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर ने सदैव लोक कल्याण की भावना से अपने जीवन के एक-एक पल को एकमात्र अपनी आत्मा को विकसित करने के लिए लगाया. लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर आज स्थूल देह रूप में हमारे बीच नही है किन्तु उनकी सूक्ष्म विश्वात्मा जाति, धर्म तथा राष्ट्र से ऊपर उठकर लोकमाता के रूप में भारत सहित प्रत्येक विश्ववासी को विश्व एकता, विश्व शान्ति तथा विश्व बन्धुत्व के मार्ग पर चलते हुए अब आगे सारी वसुधा को कुटुम्ब बनाने के लिए सदैव प्रेरित करती रहेगी. पृथ्वी एक देश है हम सभी इसके नागरिक है.

जनक-छन्द

नारी गहना लाज है
चरित्र ही पहचान है
सुरभित अपना आज है।1।।
पग-पग मंडराता जहाँ
खतरा कामी पुरूष का
औरत सब सबला वहाँ।।2।।
शरण मत जाना जरा
मिलती है ममता यहीं
सुखों का खजाना भरा।।3।।
प्यारा हमें हँसना सिखा
धर्म हमें मरना सिखा
दर्द हमें सहना सिखा।।४।।
मेरी मंजिल है कहाँ
सोच हार मत हौसला
अपना वादा है यहाँ।।5।।

-डॉ०नीता अग्रवाल 'निधि'
हनुमानगढ़, राजस्थान

तपन

स्वतंन्त्रता की
जंग के समय
वे कहते थे
भारत महान है!
और अब
आजादी के बाद
वे कहते हैं
घोटाला महान है।।

विचार

बढ़ती मँहगाई पर
मेरी पत्नी ने किया
कई महीने विचार।
अन्त में बोली-
राजनीति से अच्छा नही
और कोई व्यापार।।

-अनिल द्विवेदी 'तपन',
कन्नौज, उ०प्र०

चुनाव लड़ जायेंगे

साहित्य से कुछ होगा नही
गुमनामी में मर जायेंगे।
हजारों लाखों दिग्गजों में क्या नाम कमाएँगें
कविता करें या कहानी लिखें
रद्दी ही बन जाएँगे।
इससे अच्छा तो, हम चुनाव लड़ जायेंगे।
विधानसभा की कुर्सी हथियाकर
खूब कविता सुनायेंगे
लेग मजबूरी में सही सुन तो पायेंगे
मेजे भी थपथपायेंगे
नारे भी लगायेंगे
सबसे अच्छी और बड़ी बाते जो
साहित्य में सुनी जाती नहीं वहाँ
गालियाँ के अल्फजाज भी अखबार में
पन्ने-पन्ने पर छप जायंगे।
चुनाव ही लड़ जायेंगे।
मुफ्त की सवारी पर खूब भ्रमण पर जायेंगे
खूब दूध-मलाई खायेंगे।
पुश्तों तक को घसीट ले आयेंगे।
जो मन में आए कविता सुनायेंगे
वाह-वाह भी पा जायेंगे
किताबे भी खूब छपवायेंगे
गुड्डी बौआ, चुनी-पिंकी सबको घुमायेंगे।
यश-जय की बल्ले-बल्ले
सो चुनाच ही लड़ जायेंगे।
कभी इनकी भी
झाँकी निकले
परेड मैं हर सिपाही
इनको भी ठोके सलामी
क्यूँकि इनके हक की
किसी को बना पड़ी
रात गुजरें फुटपाथों पर या
उम्र ही गुजर जाए
साठ-सत्तर सालों में भी
दिली नहीं में तस्वीर
आहिस्ता आहिस्ता कीजिए बातें
कहीं पहनाए ना कोई जंजीर
कभी उस हिन्दुस्तान की निकले झाँकी
जहाँ भूख से मर जाते हैं लोग
और कहीं सड़कों पर
बिछ जाती है किसानों की किस्मत
रची की भाँति
बेकार पड़ती है जहाँ इनकी तकदीर
दाम की बात क्या
लाशों की भी लगती नहीं बोली।

-सुधा मिश्रा, बिहार

थर्मामीटर का आविष्कार

लल्लू ने पूछा कल्लू से,
'एक बात बताओ यार।
कब, किसने क्या था बोला
थर्मामीटर का आविष्कार?''
'गैलीलियो नाम है उसका',
बेला कल्लू सोच-विचार।
1593 में किया था उसने,
थर्मामीटर का आविष्कार।।
जन लो यार/राधे लाल 'नवचक्र'
'बोलो लल्लू, क्या सुना है,
तुमने ग्राहम बेल का नाम?'
पूछा कल्लू ने जब उससे,
बोला लल्लू, 'नहीं श्रीमान!!'
'टेलीफोन का सुनो भाई,
किया था उसने आविष्कार!
है 1976 की यह बात बन्धु',
बोला कल्लू, ''जान लो यार!!'
रहे न मलाल/राधेलाल 'नवचक्र'
लल्लू ने कहा कल्लू से,
'एक अमेरिकी का है कमाल।
पनडुब्बी का किया था जिसने
आविष्कार, वाह! मं का लाल!!

कब, किसने किया था ऐसा,
इसका भी तुम सुन लो हाल।
1776 की है यह बात सखा,
जानकारी का रहे न मलाल।।
'क्या नाम है उसका रे भाई?
पूछा कल्लू ने जब उससे।
'डेविड बुसनेल' लल्लू ने तब
दिया कल्लू को उतर झट से।।
ये निशान भी तो/राधेलाल 'नवचक्र'
बोला इक गप्पी दूजे से,
बड़ी-बड़ी जंग लड़ी मैंने।
देखो, मेरी देह पर घाव
के हैं कितने गहरे निशान।।
झट बोल उठा दूजा गप्पी,
'अरे, निशान क्या देखना है!
ये निशान भी तो मैंने ही
भूल गए क्या, बनाएं है!!
-राधेलाल 'नवचक्र', भागलपुर, बिहार

स्वतंत्रता में

हमें लगभग दो सौ वर्षो तक,
किन्हीं सींखचों में रहना पड़ा,
सब कुछ सहना पड़ा,
उन्हें झेलना पड़ा,
परंतु हम आज स्वतंत्र है,
स्वतंत्र है हमारी बांहे,
स्वतंत्र है हमारी सोच,
हमारे मन, हमारी उम्मीदें,
आशाएं और मनोकाक्षाएं,
सब हां सब स्वतंत्र है,
नहीं वे सींखते है,
जो हमें परतंत्रता में,
जकड़े थी,
अब हमें परतंत्रता से
परें होकर, बढ़ना होगा,
किसी ऐसी दिशा में,
जहां हम पा सके,
हार वह जो हमें,
स्वतंत्रता में पाना है।
-संतोष श्रीवास्तव 'सम',
कांकेर, छ.ग.

प्यार और बाजार

सपनों का राजकुमार
नहीं आता हकीकत में
आते हैं खरीद-फरोख्त
करने वाले
शादी के नाम अपनी
नीलामी का विज्ञापन लेकर
प्यार के नाम पर
भूखे-भेड़िये
और अच्छी कीमत मिल जाये
बेच देते हैं दलाल बनकर
राजकुमारी भी नहीं आती
सुखी जीवन की तलाश में।
तलाश रहती है
अमीर, अच्छी नौकरी,
बैंक बेलेन्स वाले की
बेकारी की मार से
स्वप्न में सुंदरियाँ नहीं
सरकारी रफ्तर दिखते हैं
प्यार को जमाने की हवा लग गई
हवा हो गया प्यार
पंचर टायर हो गया है जीवन
और ऐसे में बगल से
सरसराती शानदार कार निकल जाये
तो किसका मन नहीं होगा
बेच दे अपना ईमान
जो बाजार के लायक नहीं
वो जीवन के लायक नहीं
ऐसे में प्यार,
सपनो का राजकुमार/राजकुमारी
सब पिछड़ी, पुरानी बातें लगती हैं
आदमी सच्चा नहीं
तो प्यार कैसे सच्चा होगा
और जो भाग जाते हैं घर से
वे आ जाते हैं वापिस
कुछ दिनों में
एक दूसरे पर आरोप लगाते हुए
जो नहीं आते
उनका पता नहीं
प्यार सच्चा था
या बाजार में बिक गये कहीं।
-देवेन्द्र कुमार मिश्रा,
छिन्दवाड़ा, म.प्र.

परीक्षा

कोख में ही शुरू हो जाती परीक्षा,
जन्म लेने की, इस संसार
में बसने की,
कदम-कदम पर इम्तिहान,
कभी कागजों से,
कभी भावनाओं के
तो कभी मौसम के।
परिणाम नहीं आते इनके,
पर लगातार देते-देते इम्तिहान,
थक जाते हैं हम,
धोखे खाते हैं
फिर भी दोहराते हैं वही गलतियाँ,
मिलते हैं सबक
जो कभी किताबों में नहीं होते,
जिनके लिये परिभाषा और शब्द
नहीं होते?
देते हैं सबक, सिर्फ वो ही
जिन्हें हम अपना कहते हैं
विश्वास करते हैं।
सोचते हैं न जाने कौन सा
तमगा पहना देंगे।
चल देते हैं पूरी कर अपनी उम्र
वो समझते नहीं, हम समझाते नहीं,
सिर्फ इक अदृश्य परीक्षा के पात्र बने,
उठा दिये जाते हैं, ये कहकर
'जल्दी करो, कब तक घर में रखेंगे?'
-शबनम शर्मा, सिरमौर, हि.प्र.

दोहे

बुझी हुयी वे राख फूंककर, जला रहे हैं अंगीठी।
आरक्षण की खीर आज तक, जिन्हें लग रही मीठी।।
पग पग अतिक्रमण लीलायें, हर पद है आरक्षित।
हर इक छोटी मछली मानो, बड़ी से है अब भक्षित।।
कलयुग में किरकेट का, इक इक रन गिन जाय।
किसान कर रहे खुदकुशी, शासन शतक छुपाय।।
बता रहा हूँ आपको, घातक है दलतन्त्र।
प्रजातन्त्र का भ्रूणवध, करता आया तन्त्र।।
करता आया तन्त्र, इसी ने बापू को मारा।
खण्ड-खण्ड कर दिया है भारत, लूटा देश है सारा।।

-पं० **मुकेश चतुर्वेदी 'समीर'**, सागर, म.प्र.

पंचामृत

दसों इन्द्रियों अश्वदस, उच्छृंखल बलवान।
मन को मानो सारथी, हो वह निपुण सुजान।।
हो वह निपुण सुजान, संभल वल्गाएँ धारे।
हय जो चले कुचाल, खेंच चाबुक की मारे।।
ऐसे ही रथ पहुँचेगा, गन्तव्य 'टवाणी'।
इसी युक्ति से मुक्ति, मिले तर जाये प्राणी।।
फैला रहा है सिनेमा, टी.वी. का यह रो।
देख न सकते साथ सब, बिगड़ रहे है लोग।।
बिगड़ रहे हैं लोग, युवक-युवती सब राजी।
है कितनी अश्लील, आज विज्ञापन बाजी।।
सांस्कृतिक प्रदूषण बंद हो कहते 'टवाणी'।
गंदे गानों के पीछे, दुनिया दिवानी।।
अवगुण अपने में भरे देय अन्य को दोष।
पीते असंयम सुरा, कैसे रहता होश।।
कैसे रहता होश, अपावन दृष्टि हमारी।
रति अंकित चित्रों में निहित कलाएँ सारी।।
नग्र जैन मुनि रहे, जोड़ते हाथ 'टवाणी'।
छुये वैद्य गुप्तांग काम की नही निशानी।।
इस पश्चिम की हवा ने, किया बहुत कुछ भ्रष्ट।
हुई हमारी सभ्यता-संस्कृति सब कुछ नष्ट।।
संस्कृति सब कुछ नष्ट, भयानक आई आंधी।
सुधरे नहीं जन्म ले चाहे लाखों गाँधी।।
जिस दिन बूंद-बूंद सुधरेगी स्वयं 'टवाणी'।
मीठा होगा तब ही हिन्द महासागर का पानी।।
कीच बीच में अछूते रहना कमल समान।
ये ही जानो है सभी जीवों में भगवान।।
जीवों में भगवान, दया आभूषण मानो।
धर्म शास्त्र को सबसे बढ़िया साबुन जानो।।
जीते मरते सत्य बिना नहीं गत्य 'टवाणी'।
प्रायश्चित है पापों को धोने का पानी।।

-कृष्णचन्द्र टवाणी
प्रधान संपादक, अध्यात्म अमृत, किशनगढ़, राजस्थान

मुक्तक

गाड़ी से पहले उनके रोज नये सैर-सपाटे थे।
उठती ऐसी तरंगे थी, मौजों के नहीं घाटे थे।।
आँखों में कई सपने व जुबान पे कई वानडे थे।
नही कभी कही यह खामोशी और यह सन्नाटे थे।।1।।
जब से वे खुफा हुए है, रोती यह बस्ती सारी है।
सुनाये दर्द क्या, लग रही जिन्दगी हारी-हारी है।।
न आँखों में अब सपने है, न सीने में कोई अरमां।
संग ढलती शाम के, बुझता सा यह चिराग प्यारा है।।2।।
सहरा का है सफर मेरा, मेरे साथ-साथ न आओं।
किये है घर जख्म गहरें संग मेरे न अरक बहाओं।।
बहता है मुसलसल आँखों से आवलों का आब बहुत।
ढह चुके है ख्वाब सारे सब, न और उम्मीद जगाओं।।3।।
हम हंसके मम-ए-तलखी अयाम को पिये बैठे है।
समझ मुक्कदर की रजा, कजा से इम्तां दिये बैठे है।।
दिये है यह यादगार जख्म जिन्होंने हमें अलवरी।
भलां खताओं को, जिस्त उन्हीं के नाम किये बैठे है।।4।।

मुक्तक

जब तक मेरे शहर में शराब बंद थी, अमन ही अमन था।
नहीं कहीं कोई दंगा था, खुशहाल सारा का सारा यह चमन था।।
लगा था लौट के फिर एक बार वे दिन सारे आये है।
हर चेहरे ये मुस्कान और हर्मित अलवरी हर मन था।।
2. यह सुख-सुविधाए केवल उनके लिये है, जिनका जोर है।
बाकी को धक्का-मुक्की और मुश्किल रोटी का कौर है।।
छेखने से पहले ही बीत गये वे दिन सारे अलवरी।
रोज रोमी-रोमी रात और एली-ढली अब भौर है।।

-डॉ० जयसिंह अलवरी,
सम्पादक-साहित्य सरोवर, जिला-बल्लारी, कर्नाटक

संदेश

नशा-नशीली वस्तु से, 'अखिल' रहें नित दूर।
सबके होंगे आप प्रिय, प्यार मिले भरपूर।।
जो नर करता है नशा, मरता बारम्बार।
हेय दृष्टि से देखते, देते सब दुत्कार।।
नशा नाश तन का करे, पीढ़ी को बरबाद।
'अखिल' नशे को छोड़िए, रहें सदा आबाद।।
नशे की लत में जो पड़ा, हुआ सभी कुछ नाश।
बीबी-बच्चे रो रहे, चलती केवल श्वास।।
करो आत्म-संकल्प अब, नशे को देंगे त्याग।
स्वप्न पूर्ण होंगे 'अखिल' उठो मनुज! अब जाग।।

-अखिलेश निगम 'अखिल',
कबीर मार्ग, लखनऊ, उ.प्र.

आजकल के शिक्षित युवा

परिचय बढ़ा कर शीघ्र ही वे 'डेट' पर जाने लगे।
दोस्ती करके 'रिलेशनशिप' में भी रहने लगे।।
मुखौटा कुंवारा रहने का लगा कर घूमते
रात मदिरा पान कर सहवास भी करने लगे।।
ना लगी मेंहदी न कोई सात फेरे भी लिये।
कोर्ट में जा करके 'लवमैरिज' करा रहने लगे।।
एक या दो वर्ष में ठंड़ा पड़ा जब जोश तो
वन्द प्रेमालय कर तलाक भी लेने लगे।।
आजकल के नवजवानों की यही हैं दुर्दशा।
हुए एकांकी तो चिन्ताग्रस्त वे रहने लगे।।
प्रेम और वियोग के अवसाद में घिरते रहे।
जिंदगी नीरस बनाकर खिल से रहने लगे।।
कामांध हो अवहेलना परिवार वालों का किया
अन्ततः करनी पर पश्चाताप को ढ़ोने लगे।।

महंगाई

रसोई में लगी आग, प्याज ने फिर रूलाया
गेहूँ, दाल, चावल के भाव फिर चढ़े
घर बनाना हुआ मुश्किल
डीजल, पेट्रोल के दाम आसमान पर
शाक-सब्जी, फल पहुँच से दूर
घी, तेल-तिलहन ने बिगाड़ दिया बजट
तमाम बाजारू चीजे जैसे-
कपड़े, अन्न, जेवर, मेवा-मिठाई
क्या इन तक ही सीमित है महंगाई?
दरअसल, महंगे तो हैं
उस झोपड़ी में रहने वाली 'मुनिया' के सपने
क्योंकि पगार कम है उसके बापू की।
महंगा हैं 'निर्भया' के जख्मों का मरहम,
जो ड़री-सहमी सी आज भी पूछती है-
क्या इसलिए कि मैं लड़की थी?
बहुत महंगी हैं दुनिया में,
चिड़िया को उड़ने की आजादी।
पल-पल अंधेरे में ढ़लते हुये जीवन को
रोशनी की एक-एक किरण बहुत महंगी हैं।
मौत के साये में पलते हुये जीवन की,
जिन्दगी की मुटूठी भर धूप बहुत महंगी है।
तकनीक की दौड़ में दौड़ते हुए बचपन को,
पकड़म-पकड़ाई, गिल्ली-डण्ड़ा भी मंहगा हैं।
पीढ़ियों के पेड़ में जड़ों से बुजुर्गो को,
आजकल बुढ़ापे का सहारा भी मंहगा हैं।
जिन्दगी के झूठे-झूठे गीत गाते लोंगों को,
जीवन का सच्चा ककहरा भी महंगा हैं।
वो महंगाई आखिर कहाँ नहीं है?
जहाँ है विवशता, महंगाई वहीं है।
चलो ये तो हुई दुनियादारी की बातें
पर सच कहूँ, मोमोज, मंचूरियन के इस दौर में,
और तो और महंगाई के चक्कर में
याद नहीं जाने कब से मैंने दाल नहीं खाई हैं,
पर हर रोज छाती पर मूंग-सी दलती
महंगाई है, महंगाई हैं,
महंगाई हैं।

-आराधना शुक्ला,
पुत्री-श्री अरूण कुमार शुक्ला, कानपुर, उ.प्र.

कहानी

किनारा

-डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली

मैं कब से बेरोजगारी का शाप झेल रहा हूँ, वर्ष बीत गये अब तक कोई व्यवसाय नहीं, जबकि मैं शैक्षणिक योग्यताओं से सम्पन्न हूँ. मुझे वो दिन याद आते है जब मैं कम्पनी में जी. एम. था, रौबदाब से रहता था. धीरे-धीरे कम्पनी की मालिक ने नई भर्ती तो दूर, कार्यरत लोगों को काम से हटाना आरम्भ किया. मुझे यू.एस.ए. जाने का आफर मिला, और जी.एम. के पद से रिज़ायन कर अमेरिका में जाने का रास्ता साफ किया. सोचा था वहां पहुंचकर किसी व्यवसाय में लग जाऊँगा, किन्तु वहां भी जैसा सोचा था, न कर सका, भारत से बुलावे आने लगे, पतनी की बीमारी के कारण विवश होकर भारत आना पड़ा. पास का पैसा सारा का सारा समाप्त हो गया फिर भी जैसे तैसे पत्नी का इलाज कराया. पत्नी ठीक होने लगी किन्तु मेरी दशा बिगड़ने लगी जिसकी वजह है व्यवसाय का न होना. कैसे चलेगी दो बच्चों की पढ़ाई लिखाई. इंटरनेट पर रोज़गार ढूँढ़ता हूँ, किन्तु हर दिन प्रतीक्षारत रहकर अगले दिन के सहारे जी रहा हूँ.

क्षण दिन की तरह माह और वर्ष व्यतीत होते जा रहे है किन्तु फिर भी प्रतीक्षा है. सोचता हूँ माँ और पिता पर ऐसे में क्या बीत रही होगी. पिताजी दो वर्ष से पेंशन भोगी हैं किन्तु वो मेरे लिए चिन्ताकुल रहते है, दोनों बच्चों की पढ़ाई के लिए वो अपनी पेंशन में से दस हज़ार मुझे भेज देते है. मेरे पास साधन न होने से वे दस हज़ार चौपट हुए भी लेने पड़ते है, नही तो बच्चों की पढ़ाई चौपट होगी और हाँ नौकरी या किसी व्यवसाय के होते ही पिताजी को उतना सब लौटाऊँगा, बल्कि उससे अधिक जितना वे बराबर दे रहे है. पत्नी के इलाज़ को भी पैसा चाहिये. बिना पैसे ग्रहस्थी की गाड़ी कैसे चलेगी. ग्रहस्थी की गाड़ी चलाने के लिए पैसा ईंधन है, बिना उसके गति अवरूद्ध हो जायेगी. अतः विवशता में अनचाहा भी करना पड़ता है. आजकल धीरा भी गलियों गलियों रोज़गार के लिए मारी मारी घूम रही है क्योंकि अब थोड़ी वो ठीक हो गई है. अपने से अधिक उसे मेरी नौकरी की चाहत है. कमाल की नारी है वो उसने बर्तन मलने वाली बाई के अलावा, कपड़े धोने वाली, सफाई करने वाली यानि झाड़ू पोंछे वाली और कुक को हटाकर, काम स्वयं संभाल लिया है. उसने शापिंग करना, मूवी देखना और मेकप का सामान लाना ही बन्द कर दिया है. सुबह-शाम पूजा, रात में गायत्री मंत्र का जाप करती है. मनी की वर्थडे सेलिब्रेट करने के लिए उसने घर में ही शाम को कई दीप जलाकर बच्चा पार्टी को कोल्ड ड्रिंक में घर का बादाम शेक तथा केक की जगह गाज़र का हलवा खिलाया. रिटर्न गिफ्ट में बच्चों को कलरिंग बुक तथा कलर बाक्स देकर बच्चों को खुश कर दिया. बच्चों की पोइम्स तथा देशभक्ति की कवितायें भी हुईं, बच्चों ने डान्स भी किये, वो मुझे ही समझाती हैं- ''परेशान होने के स्थान पर कर्म करना चाहिये, कभी तो बिगड़े दिन समझ लेंगे.''

मैं जब धीरा से कहता हूँ कि मेरी आँखें अब उम्मीद में पथरा गईं, तो वो कहती है-''समय एकसा नहीं रहता. कल के दिन अच्छे आने वाले हैं. हमें वो सब मिलेगा, जिसकी चाहत है वशर्ते हम कर्मशील बनें. सोचता हूँ मेरे ये दुर्दिन क्यों आये?'' फिर स्वयं को उत्तर देता हूँ कि महत्वाकांक्षाओं ने नौकरी को ठुकराकर अमरीका में बसने के स्वप्न देखे थे. सुनिश्चित को ठुकराकर अनिश्चय भरी दिशाओं में भटका, उसी का मिला है ये प्रतिफल. मंगल

इतनी सुन्दर, देखने में रईस और नौकरानी का काम? उसका पेशा खूब फल-फूल रहा था. लेकिन अकेली औरत भरपूर जवान. कदम-कदम पर परेशानियां आने लगी. एक दिन जागीदार की हवेली से बुलावा आया. लड़के की खुशी की खबर देने गई.
'बहुत नाम सुना है अन्नो बाई तेरा.' वह जागीरदार की नजर पर चढ़ गई.

ग्रह जाने के स्वप्न देखने वालों जैसी ही मेरी दशा है. मंगल पर पहुँचने के लिए अरबों रूपये व्यय किया. यदि पहुँच भी गये तो क्या मिलेगा? वहां जाने के लिए कितना खोया है वैज्ञानिको ने. अरबों रुपया यदि मानवता के कल्याण में लगता तो स्थिति दूसरी होती. किन्तु बुद्धि चंचल मन के वशीभूत होकर गुमराह हो जाती है. मैंने भी अमरीका कैलिफोर्निया में बसने के स्वप्न देखे थे. उस समय मैं भूल गया था कि मेरा अपने माता पिता के लिए भी कोई दायित्व है. चकाचौंध में अन्धे होकर जो कर्तव्य भूलते हैं उनकी दशा ऐसी ही होती है जैसी कि मेरी. माँ-बाप को सहारा देना दूर उनकी सहारा पेंशन का कुछ भाग भी मैं लेने को विवश हूँ. मैं स्वयं को भी ऐसे में माफ नहीं कर सकता.

अचानक द्वार पर खटखट, खटखट द्वार खोलते ही धीरा ने घर में प्रवेश लेते ही कहा ''सुनो मेरे पास पांच लाख का गहना है उसे बेंचकर पचास गज में बना कमरा खरीद रही हूँ जिसमें आप फिज़ियोथिरेपी का सेंटर चलाइयेगा.''

''अरे उसमें बहुत कुछ लगाना पड़ेगा छोड़ों मैं नौकरी का बन्दोवस्त करना अच्छा समझता हूँ. वही तुम्हारे गहने से मैं काम शुरू करूँगा. कोई हर्ज़ नहीं मैं तैयार हूँ.''

किन्तु धीरा के बहुत बार समझाने पर भी मैंने अपना निषेध सबल शब्दों में व्यक्त किया. नौकरी बढ़ने के कारण हम दोनों ही भटकते भटकते थक गये हैं. मैंने धीरा को नहीं बताया कि मैं अपने दोस्त वकील रहमान के निर्देशन में वकालत की तैयारी में लगा हूँ. सालभर ऐसे ही चलेगा, बाद में मैं कोर्ट जाकर वकालत कर पाऊँगा. कठिनाईयाँ मानव को बहुत कुछ सिखाने आती हैं, अतः वे हितैशिणी है. हर काम में कुछ न कुछ भला छिपी रहती है किन्तु मानव जिसे न समझकर अधीर हो जाता है. रजिस्ट्रेशन मैंने इलाहाबाद से करवा लिया है, हताश होकर बैठना अपने अमूल्य जीवन से खिलवाड़ करना है.

मैं धीरा को वैवाहिक वर्षगाँठ पर कोई अच्छी सूचना देना चाहता था किन्तु ऐसा कुछ नहीं होने वाला है जिसकी खुश खबरी मैं उसे दे सकूँ. दिन पर दिन ऐसे ही निकलते जा रहे हैं और धीरा, हिम्मत से मुस्कराते हुए हर कठिनाई का संवरण कर रही है. दो महीने प्रतीक्षा में व्यतीत हो गए किन्तु अब तक कहीं कुछ व्यवसाय नहीं. खैर लीगल प्रोफेशन ही मेरे लिए बचा है. इसी के बलबूते धीरा की हिम्मत बढ़ाऊँगा.

आजकल धीरा सायंकाल को भी देर से आती है. दस से चार का समय कहां बिता रही है आज उससे ज़रूर पूँछूँगा धीरा सुबह बच्चों को स्कूल छोड़कर मेरे लिए भोजन व्यवस्था कर सायं पाँच बजे घर वास आती है. ''एक माह ऐसे ही बीत गया किन्तु उसने कुछ नहीं बताया.

धीरा 14 दिसम्बर को बहुत प्रसन्न है. उसने मुझे देखा निर्निमेश देखती रही. मैंने पूछा ''क्या है बात?'' ''मैं आपको देख रही हूँ संभव है आप ही हैप्पी मैरिज डे की याद दिलाये'' किन्तु आपने मेरा आशय नहीं समझा. ठीक कहती हो धीरा मैं इस वैवाहिक वर्षगाँठ पर तुम्हें तोहफा भी देने की स्थिति में नहीं हूँ. ''धीरा ने मुस्कुराते हुए कहा ''आप मुझे निरन्तर तोहफे दे रहे हैं आज़ मैं आपको ऐसा तोहफा या भेंट दे रही हूँ जो आपको पसन्द आयेगा, वो हम जो भटकती लहरों का ''किनारा बनेगा'' कहते हुए धीरा ने डिग्री कालेज में हुई नियुक्ति का नियुक्ति पत्र मेरी हाथों में सौंप दिया.''

मैं इस तोहफे से प्रसन्न हूँ कम से कम रोज़गार की भटकन में धीरा ने ''किनारा'' तो सौंपा. यह एप्वाइंटमेन्ट लेटर हम दोनों की वैवाहिक साल गिरह की अच्छी गिफ्ट है.'' मैंने भी धीरा को हृदय से लगाते हुए कहा- ''तो सुनो सालभर की मेरी मेहनत भी रंगलाई है. अब मै भी एडवोकेट हो गया हूं, हर दिन जाकर अपने दायित्व को निभाऊँगा. हम दोनों को व्यवसाय के रूप में किनारा मिल गया. दूर्दिन की कथाओं को भूलकर अब सुदिनों की कहानी बनाना है और फिर माँ और पिताजी इस शुभ सूचना से कितने प्रसन्न होंगे. कह नहीं सकता'' धीरा ने अर्थ भरी दृष्टि से देखते हुए मुझसे कहा-''माँ और पिताजी को अपनी पहली नौकरी में से कुछ न कुछ अर्पित करूँगी यह नौकरी इन्हीं के आशीर्वादों का प्रतिफल है. एम.ओ. तैयार है और उसने अपने सास-ससुर को एम. ओ. कर दिया. धीरा की इस विचार धारा से मैं प्रभावित हूँ और उससे कहा ''बस-बस बड़ों के आशीर्वाद से ही सन्तान की उन्नति होती है ये भगवान को रूप है. मैं माँजी और पिताजी को कभी नहीं भूल सकती ही है मेरे भगवान.

प्रथम गुरु माता

– डॉ० विदुषी शर्मा, दिल्ली

महर्षि वेदव्यास जी के अनुसार---
'पितुरप्यधिका माता गर्भधारणपोशणात्। अतो हि त्रिशु लोकेशु नास्ति मातृसमो गुरुः।।
गर्भ को धारण करने और पालन पोषण करने के कारण माता का स्थान पिता से भी बढकर है. इसलिए तीनों लोकों में माता के समान कोई गुरु नहीं अर्थात् माता परमगुरु है!
नास्ति गङ्गासमं तीर्थं नास्ति विष्णुसमः प्रभुः।/नास्ति शम्भुसमः पूज्यो नास्ति मातृसमो गुरुः।।
गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं, विष्णु के समान प्रभु नहीं और शिव के समान कोई पूज्य नहीं और माता के समान कोई गुरु नही.
निर्माण यानी सृजन-सृजन की शक्ति प्रकृति ने केवल नारी जाति को ही प्रदान की है. (हालांकि बीज तत्व की महिमा को नकारा नहीं जा सकता.) नारी वह है जो निर्माण करती है, सृष्टि का पोषण करती है, संरक्षण करती है, पुष्पित-पल्लवित करती है. नारी जाति के बिना पुरुष का, इस विश्व का अस्तित्व संभव नहीं है. नारी हर रूप में पूजनीय है. जब एक मां बनती है तो उसके ऊपर बहुत अधिक जिम्मेदारी आ जाती है. मां वह है जो अपने बच्चे को हर तरह से, हर हर दृष्टि से सुरक्षित, संरक्षित करती है. और गर्भ (गर्भाधान) से लेकर जब तक बच्चे माँ की बात सुने, तब तक वह केवल उचित संस्कार और उचित शिक्षा ही प्रदान करती है. मां के द्वारा प्रदान संस्कार व्यक्ति के मानस पटल पर आजीवन रहते हैं. हमारा इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है जिसमें बचपन में जिन महापुरुषों ने अपनी मां से वीर रस की कविताएं, कहानी सुनी और देश के लिए अपनी जान गवा दी. एक मां अपने बच्चे को हर प्रकार से समाज उपयोगी, मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण इंसान बनाना चाहती है. इसलिए अपने पूरे तन, मन, धन से इस बात का प्रयास करती है कि उसका बच्चा एक अच्छा सभ्य नागरिक बन सके एवं मानवता के लिए, समाज के लिए, देष के लिए वह कुछ भी करने के लिए सदैव तत्पर रहे. इस संदर्भ में मैं अपनी स्वरचित कविता की पंक्तियां कहना चाहूंगी जिसमें एक माँ की महिमा का वर्णन है-
माँ है तो श्री है, आधार है क्योंकि,
प्रकृति, धरती एक माँ का ही तो प्रकार है।1 माँ है तो आसक्ति है क्योंकि,/माँ में ही तो असीम शक्ति है।2/माँ है तो त्याग है, बलिदान हैं क्योंकि,/माँ में सिमटा एक बच्चे का पूरा जहान है।3/माँ वो है जो खुद मिटकर एक बच्चे को बनाती है क्योंकि,/पत्थर पर पिसकर ही हिना रंग लाती है।4/माँ है तो परिवार है, संस्कार है, क्योंकि, केवल माँ में ही तो ममता है, प्यार है, दुलार है।5/माँ है तो जन्म है, बचपन है, लोरी है क्योंकि,/माँ की ममता एक रेशम की डोरी है।6/माँ है तो कृष्ण, है राम है, बलराम भी है क्योंकि,/माँ के बिना असम्भव इन्सान तो क्या भगवान भी है।7/माँ है तो दादी है, नानी है और, एक बालक के बिना, माँ भी एक अधूरी कहानी है।8/माँ है तो सबका बचपन अनूठा, निराला है, क्योंकि माँ ही तो हर बच्चे की प्रथम पाठशाला है।
इस कविता के माध्यम से हमने देखा कि मां व्यक्ति के जीवन में क्या कर सकती है और मां के बिना यह जीवन ही नहीं है. उसकी शिक्षा के बिना हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं बन पाएगा क्योंकि मां प्रथम गुरु है. वह गर्भस्थ शिशु से लेकर अपने जीवन के अंत तक, अपने बच्चे को केवल अच्छे संस्कार, अच्छी शिक्षा, किसी प्रतिफल की इच्छा किए बिना, प्रेम, ममता और दुलार के साथ प्रदान करती है. उसमें उसका कोई भी स्वार्थ, कोई भी लाभ निहित नहीं होता. इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति यदि कुछ भी प्रदान करता है तो उसमें प्रतिफल पाने का (किसी न किसी तरीके से, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से) उसका लक्ष्य होता है. एक माता-पिता ही होते हैं जिनमें कभी भी किसी भी प्रकार का प्रतिफल पाने की कोई इच्छा नहीं होती. वह सदैव अपने बच्चों का केवल कल्याण और कल्याण ही चाहते हैं और यह चाहते हैं कि उनके बच्चे सदा प्रगति के पथ पर अग्रसर रहें और सदा खुश रहें. इससे ज्यादा मां के बारे में और क्या कहा जा सकता है. मां केवल मां है. प्रथम गुरु है, आदरणीय है. दुनिया में सभी का ऋण चुकाया जा सकता है परंतु एक मां के ऋण से कभी भी उऋण नहीं हुआ जा सकता. इसीलिए कहा भी है सबसे पहले 'मातृ देवो भव' आता है. मां चाहे कोई भी हो सदैव आदरणीय हैं. अतः अंत में बस यही कहना चाहूंगी कि--एक माँ की बस यही कहानी है, उसके आँचल में दूध और पाँव में जिंदगानी है, /माँ और माटी का सदियों पुराना नाता है, इन दोनों की हस्ती को चाहकर भी भला कौन मिटा पाता है, एक जाननी है तो दूसरी मातृभूमि भारत माता है.

लघु कथाएं

पिता की आस

''किशन बहुत रो रहा है या अब पश्चात से उनका मन जर्जरित हुआ या पिता का अहम समझ गया था. शंकर और सुशीला का बेटा किशन, वह अपने सभी दोस्तो का संग शराब पीता था और पैसे लेकर मंजा उड़ाता था. एक बार माँ से पैसे मांगा खर्च के लिए. मां ने अपने प्यारे बेटे से बिना पूछे सौ रूपये दिया. बेटा खुशी से दोस्तों के साथ होटल, सिनेमा गया. इसी तरह मां से पैसे लेकर जाता रहा और एक दिन किशन बहुत देर तक घर न आया. पिता ने पूछा कहॉ गया है? तुमने प्यार से सिर पर जो हाथ रखा है. आज जमाना बदल गया है. नया मोबाईल, नया जूता, ड्रेस. एक तो पगार कम, ऊपर से कमरे का भाड़ा, बिजली का बिल, दूध का पैसा, समान. इतनी मंहगाई में इतना सब कुछ कैसे संभव है. फिर दोनों (माता-पिता) आपस में वादा किये कि किशन की मांग को अब पूरा नहीं किया जा सकता. गुस्सा होता है तो होने दो.

शंकर ने अपने लिये एक छोटा सा घर बनाना चाहता था, एल०आई०सी० को भरने 5000/-रुपये रखे थे. किशन दोपहर को आया था. मॉ के पैसे न देने के कारण पिता के जेब से एक हजार रुपये चुपके से उठाकर चला गया. इधर शंकर एल० आई० सी० भरने को पैसे देखा, पैसा कम. पत्नी से पूछा तुमने लिया क्या?

'नहीं तो.'

'फिर कौन लिया? पैसे फिर....

पैसे जोड़ना और किस्त भरने की चिंता में शंकर बेहोश हो गया. सुशीला क्या हुआ आपको रोते हुए पूछा. शराब पीकर बैंक में आते समय गिरकर चोट लगी थी. शंकर सोचा मैं मर गया तो पैसा बहुत मिलेगा (एल०आई० सी०, पीएफ. आदि) पत्नी पुत्र सुखी से रहेगें. शंकर आत्महत्या करने सोचा यही मार्ग हैं क्योंकि पत्नी पुत्र मेरा कष्ट नहीं समझते है. मैं पढ़ते समय पॉच मील चलकर पैदल एक ही कुरता शर्ट या उसी को पहनकर स्कूल जाता और एक दोस्त से किताबें लेकर बिजली के बिना पढता था. बाद में एक छोटी सी नौकरी मिली. अब आज के बच्चे कुछ न समझते. पुरानी क्या, आज जमाना बदल गया है. इसी उधेड़ बुन में कुछ दिन निकल गये और एक दिन शंकर ने आत्महत्या कर ली. पत्नी जोर चिल्लाने लगी. क्या कर लिया आपने? बेटा भी एक एबुलेस में लाया. दो बज गए, एक तरफ पिता की चिता और दूसरी तरफ बेटा एबुंलेस में. बेटा देखो इस तरह तुम्हारी चिन्ता में तुम्हारे पिता मर गये. तुमको शराब पीकर अपने कलेजो को तो ढडक मिल गई. मां शराब पीने के कारण ंतो मुझे कॉलेज से निस्कासित कर दिया गया, दोस्तों के साथ आते समय दुर्घटना हो गई. मॉ मुझे माफ कर दो. पिताजी के जेब से मैंने ही पैसे चुरा लिए थे. पिता के शव के पास बैठकर पश्चाताप से 'पिताजी माफ कीजिए आपकी बात न सुना. आपकी यह सहज मृत्यु नही आत्महत्या है.

-जे० वी० नागरत्नम्मा, कर्नाटक

बाढ़ की पाबंदी

अभिलाष बाबू ने संसार बसाया है. दो बेटे और दो बेटियॉ है. सरकारी नौकरी भी है. पत्नी उर्वशी खूब सुंदर है. अलहद जवानी भेक कर दोनों पति-पत्नी बहुत खुश थे. सुख के बाद दुख भी आ ही जाता है. अभिलाष बाबू के परिवार की टूटन ने उन्हें झकझोर दिया. तीन भाई और चार भतीजों की आनाकानी दूर करने उनकी कोशिश नाकामयाब हो गयी. परिवार विभक्त हो गया. अभिलाष विचल गया. वह एक कवि था. कविता के सहारे उन दुःस्थितियों का सारस्वत चिंतन लिखा करता था. इसी बीच पहले बेटा और दूसरी औलाद बेटी अपनी पसंद के चहते साथियों से गुप्त संपर्क रखने लगे. अभिलाष की अभिलाषा मचल गयी परिवार थिरकने लगा. सुन्दरी गृहस्थी की नादानी भी अहंकार में बदल गयी. स्वामी को उठक बैठक करवाना मुमकिन न हो पाया. दूध उबले तो चूल्हे को और इन्सान उबले तो मरघट को की भांति उनका परिवार का विघटन होने लगा. बड़े बेटे को नौकरी में अभिलाष लगा दिया तो वह घर से अलग हो गया और अभिमान करने लगा कि जेबर आभूषण न देना तो बाप मॉ का घोर अन्याय हो गया है. इसीलिए तनख्वाह से एक कौड़ी भी आप अनचाहे आदमियों को नही दिया जाएगा. बस रिश्ता खत्म. ओह कैसी अपार शांति दायित्व मुक्ति भगवान को शतृ धन्यवाद जो नौकरी वाली एक दुल्हन मुझे मिल गयी. सोच रहा था बड़ा छोकरा उन परिवार वालों की संकट से आसानी से छुटकारा दिला देगा. वाह रे रूपयों की ताकत जापानी नोट की तरह अर्थ की कीमत घटती जा रही है. इस महंगाई के युग में अच्छी तरह जिंदगी गुजारना मुश्किल होता जा रहा है. इसीलिए फालतू नातों को टाटा-टाटा, बाय-बाय, अलविदा. अब आई बड़ी बेटी की बारी वह छोटी-छोटी बातों पर अपनी नाराजगी जताती रहती. कभी

कभार अपने पेट अचानक दुखने से लगातार नाच नचाया करती थी. मानो किसी अपदेवी उसकी अंदरूनी शरीर में अखाड़ा मचा रही है. तमाम घर परिवार तो इसी से तंग रह जाते थे. बद किस्मत को कोस रही थी पत्नी देवी. बेचारा अभिलाष कितने डॉक्टरों, माहिरों के पास जाकर इलाज करवाता और पानी की तरह उसे दवा दारू कराने का इन्तजाम भी करवाता था. इसी बीमारी की वजह से गृहकर्ता ही अभियुक्त बन जाता था, क्योंकि उसकी कविता लिखने से ही परिवार के प्रति उसकी लापरवाही मानी जाती थी. बीचों बीच वह चालाक लड़की भी पढ़ाई में अब्बल रखने से घर की शान बढ़ती थी. उसने ऑख मिचौली खेली और एक असंभव प्रेम विवाह प्रस्ताव ने सारे परिवार को झकझोर दिया. बहुत कुठिंत भाव से उसकी शादी भी मुमकिन हो गयी और एक नाती के एक साल की परवरिश होने के बाद उसकी यादों की ताकत बिल्कुल शून्य हो गयी. उसने राह पकड़ ली. आई फिर तीसरी औलाद की बारी वह चुप्पी खामोशी की अवतार थी. स्नाकोत्तर साहित्य उत्तीर्ण होने के बावजूद न जाने उसके मने में क्या था. अभिलाष को मालूम न हो सका. मॉ तो आसमान में तैर रही थी. गृहस्थ को अचंभा बना देती थी। तनिक भी परेशनी झेल नहीं पाती थी. मासिक ऋतु स्त्राव बिगड़ जाने की बीमारी भी उसे विकृत मानसिकता की ओर ले जा रही थी. अच्छा इलाज कराने के लिए अभिलाष ने कविता महारनी की रचना को भी जलांजलि दे दी. क्षुब्धा पत्नी की अच्छी तरह चिकित्सा-अस्त्रोपचार करवाकर तंदुरूस्त औरत बनवा दी. मध्यक्ति तनख्वाह से दस पंद्रह हजार मुद्रा भी दांव पर लगा कर उसने सफल आत्म संतोष प्राप्त किया था. फिर भी धर्म पत्नी गुर्राने लग रही थी कि दूसरी बेटी की शादी फौरन क्यों नहीं करवा रहे हो? उम्र पच्चीस साल लपक रही है. जो प्रस्ताव लाया गया दोनों मॉ बेटी उसके बाल से खाल ही निकालती रही थी. उनके मन का सुराग गृहकर्ता को तनीक भी नही जताया जाता था. एक बहुत आग्रही पध से उनकी रजामंदी पर ही बंधन की नींव डाली गयी. पत्नी के नाखून भाई बिरादरी चुप्पी साधते रहते थे. इस परिवार से उनका अच्छा दिलदार आर्थिक बर्ताव हो नही पा रहा था, इसीलिए वरपक्ष की कमजोरियों पर उनका पर्दाफाश भी नहीं हो सका. एक जन तो 'नरे वा गुजरे अश्वथामा हत' कहकर व्यग्यं भी करने लगा मानों तुम कश्मकश झेलते रहो और हम लोग ऐन वक्त के बाद ही सही दिखलाकर तालियॉ बजाते रहेंगे. शादी के बाद वही हुआ जो पत्नी के बिरादरी चाहते थे. पत्नी की तबियत बुरी तरह टूट गयी और बुद्धू बनकर बेटी पर तरस खाने लगी उस पर सारे घर परिवार की दौलत उडेल देने, रात-दिन एक करने लग गयी बेटी ने तो लुकछिप कर आनंद उठाने लगी और मौनावती बनकर ही अपने घर सभांलने चल पड़ी. अब आ गयी चौथे की बारी. अभिलाष की अपनी एक लायक विद्यार्थिनी के साथ छोटे बेटे का ब्याह करवा दिया गया. इसी से सबके सब घबरा गए है. चूकि इस की कहानी लंबी नही हो पाई तो बुद्धू नायक को सब भक्त भोगने लगे. इसी से कविता की शुष्क धारा में फिर प्रबल ज्वार आने लगा! कथा कविता की बाढ़ को कलम की पाबंदी दिलाने की कोशिश हुई. अब आ गयी अभिलाष की आखरी बारी वह शांत स्थिर स्वाधीन चिंता नायक बन गया. कलम चलती रही है. जिंदगी जूझती रही है. तृप्ति मिलती रही है.

-श्री हरिहर चौधरी, बुढ़ाम्ब गंजाम, ओड़िशा

चींटी की सीख

गांव की कच्ची सड़क पर एक साधु गांव की तरफ भिक्षा मांगने जा रहे थे. सामने से उस सड़क पर एक बोरों से लदी बैलगाड़ी आ रही थी. चालक उसे तेज चला रहा था. अचानक साधु की नजर एक चींटी पर पड़ी जो एक तरफ से उस सड़क के बीच पहुंच चुकी थी, और बड़ी तेजी से दूसरी तरफ दौड़ी आ रही थी जिधर साधु जी थे. बेचारी चींटी ने मुश्किल से हॉफते-हॉफते सड़क पार कर ही रही थी कि बैलगाड़ी आगे निकल गयी. चीटी सड़क के दूसरे छोर पर पहुंच कर रूक गई और थोड़ा चैन से सांस लेने लगी. साधु ने कहा, 'चीटी जी तुम इतना तेज क्यों भाग रही थी? अभी तुम हॉफ रही हो.'

'साधुजी आप तो देख ही रहे थे कि बैलगाड़ी तेजी से सामने से आ रही थी. मै या तो बैलों के पांव तले आकर या बैलगाड़ी के पहियों के नीचे आकर मसल-कुचल दी जाती तो मर जाती न.''

'तो क्या होता. तुम्हारी इतनी छोटी सी काया किस काम की. मर जाती तो शायद कोई दूसरा अच्छे रूप में जन्म मिल जाता.'

साधु जी, क्या बात करते हैं आप? जैसे आपके शरीर में आत्माराम वैसे ही तो मेरे शरीर में. परमात्मा जी ने मुझे जो भी काया दी है निश्चय ही उसका कोई कारण होगा.

और फिर मुझे अपना जीवन अत्यंत सुदंर और बेहद पंसद है. अपना जीवन सुरक्षित रखना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार ही नही बल्कि मेरा परम कर्तव्य भी है. दूसरी बात आप क्या जानें गृहस्थ आश्रम की सुदंरता. मेरे जीवन के साथ जुड़े है मेरे पति और हमारा आपसी प्यार. हमारे नन्हें-नन्हें बच्चे और उनका प्यार-दुलार. हमारे बूढ़े माता-पिता और उनका स्नेह और आशीर्वाद. वे अपनी-अपनी उमर में काम करने में असमर्थ है. मैं जवान हूँ. उनके लिए खाने की सामग्री लेकर जा रही हूँ. क्या मेरा कर्तव्य नहीं बनता मैं उनकी यथाशक्ति सेवा करूं. हां मैं तो यह मानती हूं कि जिसने गृहस्थी अच्छे से निभा ली उसने इस संसार में स्वर्ग पा लिया. शाम ढ़लने को है, कृपया मुझे जाना है. वे सब मेरी प्रतीक्षा में होगें. यह सब बोल चींटी ने फिर से तेज गति पकड़ ली और चलती बनी. साधु जी उसे एकटक देखते ही रह गए. जब तक वह उनकी आंखों से ओझल नही हो गई. फिर संभल, अपने-आप से बतियाने लगे. 'धन्य हो चीटीं देवी जी. आप धन्य हो. हां कोई गृहस्थ भी साधु संत हो सकता है. मैं मूर्ख अपने जीवन के संघर्षो से हार मान अपने बूढ़े माता-पिता, अपनी पत्नी और बाल-बच्चों को बोझ समझ कर साधु बनने चला था. केवल गेरूआ वस्त्र पहनने से कोई साधु नहीं बन जाता. साधु तो वह होता है जिसका मन निर्मल हो, कर्म और कर्तव्य से शुद्ध हो. जो उपकार भाव से भरा हो और अपने गृहस्थ आश्रम के प्रति कर्तव्यबद्ध हो, उसी चींटी की तरह."

यह वचन बोल साधु तुरंत अपने घर लौट गया. रास्ते में अनेकों बार चींटी का गुणगान करते हुए वह आकस्मिक बतियाया, 'सीख किसी से भी मिल जाए चाहे कोई कितना ही छोटा क्यों न हो. सीख तो सीख होती है जिसे मैं सच्चे मन से धन्यवाद सहित ग्रहण करता हूँ. आपको धन्यवाद चींटी देवी. आपने मेरी आंखे खोल दी.....मेरा जीवन मार्गदर्शक बनी."

-वेद प्रकाश कवंर, नई दिल्ली

प्रेमचंद की व्यापक दृष्टि ने उन्हें बनाया प्रासंगिक

'सौ वर्ष से भी ज्यादा पहले प्रेमचंद ने जो लिखा उसकी छाया आज भी हमारे समाज और ग्रामीण जन जीवन में मिल जाती है, इसीलिए प्रेमचंद आज भी प्रासंगिक है.' उक्त बातें प्रेमचंद जयंती के अवसर पर नारायणी साहित्य

अकादमी एवं अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में श्री जे.के. डागर ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कही.

कार्यक्रम के प्रारंभ में 'अजीम प्रेमजी फाउंडेशन' एवं 'तत्व ज्ञान' संस्था द्वारा प्रेमचंद की कहानी 'कफन' पर तैयार, कमला बाजपेयी एवं वीनम वर्मा द्वारा निर्देशित इस नाटक में भूमिका, अस्ताना, भगवती, समीर, जया वर्मा, तरूणा निषाद, भूमिका विश्वकर्मा, जया यादव, अंकिता साहू, खुशी, दिलेश्वरी, दुर्गेश नंदिनी साहू आदि ने अभिनय किया.

कार्यक्रम के विमर्श सत्र में नारायणी साहित्य अकादमी की प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. श्रीमती मृणालिका ओझा ने बच्चों को शैक्षणिक पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रेरित किया. लतिका भावे ने जहां प्रेमचंद की सहज, सरल भाषा की बात कही तो जीवेश प्रभाकर चौबे ने प्रेमचंद की सूक्ष्म लेकिन व्यापक दृष्टि ने उन्हें अमर कथाकार बनाया कहा. शुभा मिश्रा ने गोदान को लेकर अपने विचार व्यक्त किये. श्रीमती शोभा शर्मा एवं छत्तीसगढ़ी के वरिष्ठ साहित्यकार श्री चेतन भारती ने भी शुभाशीष देते हुए अपनी कविताएं प्रस्तुत की. अधिवक्ता अंबर शुक्ला अंबरीश ने छात्रों को अंकों से अधिक गुणों पर ध्यान देने की बात कही.

उपरोक्त कार्यक्रम मायाराम सुरजन कन्या उ. मा. शाला की प्राचार्या श्रीमती भावना तिवारी, पूर्व मा. वि. की प्रधान पाठीका श्रीमती पद्‌मिनी शर्मा, शशिकला वर्मा, ललिता गरेवाल, बालकृष्ण वर्मा, ए. के. बघेल, श्रद्धा सिंह, लक्ष्मी वर्मा, झरना झा, हसरत इरफान, मुकेश प्रधान आदि शिक्षकों सहित अन्य अनेक छात्र छात्राओं की उपस्थिति एवं सहयोग से संपन्न हुआ.

कार्यक्रम का संचालन राजेंद्र ओझा ने तो धन्यवाद ज्ञापन कमला बाजपेयी एवं पद्‌मिनी शर्मा ने किया.

सेहत के लिए जरूरी है

पीठ को सीधा रखकर बैठें : शरीर के भीतरी अंगों के आराम में होने का खास महत्व है. इसके कई पहलू है. फिलहाल हम इसके सिर्फ एक पहलू पर विचार कर रहे है. शरीर के ज्यादातर महत्वपूर्ण भीतरी अंग छाती और पेट के हिस्से में होते है. ये सारे अंग न तो सख्त या कड़े होते है और न ही ये नट या बोल्ट से किसी एक जगह पर स्थिर किए गए है. ये सारे अंग ढीले-ढाले और एक जाली के अंदर झूल रहे से होते है. इन अंगों को सबसे ज्यादा आराम तभी मिल सकता है, जब आप अपनी रीढ़ को सीधा रखकर बैठने की आदत डाले.

पीठ को सीधा रखें : आधुनिक विचारों के मुताबिक, आराम का मतलब पीछे टेक लगाकर या झुककर बैठना होता है. लेकिन इस तरह बैठने से शरीर के अंगों को कभी आराम नही मिल पाता.

मुझे इतनी कैलरी ही लेनी है, मुझे इतने घंटे की नींद ही लेनी है, जीवन जीने के लिए ये सब बेकार की बाते है. आज आप जो शारीरिक श्रम कर रहे है, उसका स्तर कम है, तो आप कम खाएं. कल अगर आपको ज्यादा काम करना है तो आप ज्यादा खाएं इस स्थिति में, शारीरिक अंग उतने ठीक ढंग से काम नही कर पाते जितना उनको करना चाहिए-खासकर जब आप भरपेट खाना खाने के बाद आरामकुर्सी पर बैठ जाएं. आजकल काफी यात्राएं आराम कुर्सी में होती है. अगर आप कार की आरामदायक सीट पर बैठकर एक हजार किलोमीटर की यात्रा करते है, तो आप अपने जीवन के कम-से-कम तीन से पांच माह खो देते है. ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि लगातार ऐसी मुद्रा में बैठे रहने की वजह से आपके अंगों पर इतना बुरा असर होता है कि उनके काम करने की शक्ति में नाटकीय ढंग से कमी आ जाती है या फिर वे बहुत कमजोर हो जाते है.

शरीर को सीधा रखने का मतलब यह कतई नही है कि हमें आराम पसंद नहीं है, बल्कि इसकी सीधी सी वजह यह है कि हम आराम को बिल्कुल अलग ढंग से समझते और महसूस करते है. आप अपनी रीढ़ को सीधा रखते हुए भी अपनी मांसपेशियों को आराम में रहने की आदत डाल सकते है. लेकिन इसके विपरीत, जब आपकी मांसपेशियां झुकी हो, तो आप अपने अंगों को आराम में नहीं रख सकते. आराम देने का कोई और तरीका नही है. इसलिए यह जरूरी है कि हम अपने शरीर को इस तरह तैयार करें कि रीढ़ को सीधा रखते हुए हमारे शरीर का ढांचा और स्नायुतंत्र आराम की स्थिति में बने रहे.

पंच तत्वों से जुड़कर जीवन जीयेः हम कुछ लोगों को बता रहे थे कि हमारे योग केंद्र में एक योगिक अस्पताल है, तो अमेरिका से कुछ डाक्टर इसे देखना चाहते थे और वे हमारे यहां आए. वे एक हफ्ते यहां थे और एक हफ्ते के बाद वे मुझसे बहुत नाराज़ थे. मैंने कहा -'क्यों, मैंने क्या किया? वे चारों तरफ यही बातें कर रहे थे.' ये सब फ़ालतू बकवास है! सद्गुरु ने कहा यहां एक योगिक अस्पताल! कहां है योगिक अस्पताल? हमें कोई बिस्तर नहीं दिख रहे हैं, हमें कुछ नहीं दिख रहा. फिर मुझे समझ आया कि उनकी समस्या क्या है, फिर मैंने उन्हें बुलाया और मैंने कहा-'परेशानी क्या है' उनमें से एक महिला, जिनकी आँखों में आंसू थे, बोलीं -मैं यहां इतने विश्वास के साथ आई और यहां धोखा हो रहा है, यहां कोई अस्पताल नहीं है, बिल्कुल भी कुछ नहीं यहां और आप बोल रहे हैं कि यहां अस्पताल है. मैंने कहा- 'आराम से बैठिये. आपके अस्पताल के बारे में ये विचार है कि बहुत से बिस्तर हो जहां मरीजों को सुला दो और उन्हें दवाइयां देते रहो. ये अस्पताल ऐसा नहीं है. मैं आपको आस-पास घुमाता हूँ. सभी मरीज़ यहां बगीचे में काम कर रहे है, और रसोई घर में

काम कर रहे है. हम उनसे काम करवाते है, और वे ठीक हो जाते है. तो, सबसे महत्वपूर्ण चीज़ ये है कि अगर कोई बीमार हो तो हम उनसे बगीचे में काम करवाते है. उन्हें खाली हाथों धरती के संपर्क में कम से कम आधे घंटे से लेकर 45 मिनट तक जरुर होना होता है. ऐसा करने से वे स्वस्थ हो जाते है, क्योंकि आप जिस चीज़ को शरीर कहते है वो बस इस धरती का एक टुकडा है, है न? हां या ना? वे सभी अनगिनत लोग जो इस धरती पर चले, वे सब कहां गए? सब धरती की उपरी सतह पर हैं, है न? ये शरीर भी धरती की सतह पर चला जाएगा. जब तक कि आपके दोस्त-इस डर से कि आप फिर से न जाग जाएं-आपको बहुत गहरा न दफना दें. तो, यह बस धरती का एक टुकड़ा है. तो यह अपने सर्वोत्तम रूप में तब रहेगा, जब आप धरती से थोडा संपर्क बनाकर रखें. फिलहाल आप हर वक्त सूट और बूट पहन कर पचासवें फ्लोर पर चलते रहते हैं, और कभी भी धरती के संपर्क में नहीं आते. ऐसे में आपका शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार होना स्वाभाविक है. फिर मैंने उन्हें दिखाया-'देखो इस व्यक्ति को दिल का रोग है, उस व्यक्ति को वो बीमारी है. मैंने सभी मरीजों से उनका परिचय कराया और फिर मरीज़ अपनी बातें बताने लगे-'तीन हफ्ते पहले हम ऐसे थे, और अब हमें बहुत अच्छा लग रहा है, हम अपनी बीमारी ही भूल गए हैं. और अब सभी मेडिकल मापदंड भी कह रहे है कि वे ठीक है. अमेरिकी डाक्टर को यह विश्वास दिलाने में कि ये लोग सच में मरीज़ है हमें बहुत मेहनत करनी पड़ी. हम उन्हें अच्छे काम में भी लगा रहे है.

डॉ.मंसूरी को साहित्य भूषण उपाधि

लखीमपुरः भारतीय क्षेत्रीय पत्रकार संघ, उ.प्र. एवं भारतीय साहित्यिक संस्थान कर्वी, चित्रकूट द्वारा जगत गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय चित्रकूट में आयोजित लेखक-कवि, पत्रकार सम्मेलन में डॉ.आई.ए.मंसूरी शास्त्री की साहित्यिक सेवाओं के लिए साहित्य भूषण उपाधि से सम्मानित किया गया. सम्मान पत्र विश्वविद्यालय के कुलपति एवं समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. योगेशचन्द्र दूबे और चित्रकूट के महाराजा तथा विश्वविद्यालय के संस्थापक सदस्य, सभा के अध्यक्ष हेमराज चतुर्वेदी द्वारा प्रदान किया गया. सभा का संचालन भारतीय साहित्यिक संस्थान कर्वी के महासचिव डॉ. मनोज द्विवेदी ने किया. इस सम्मेलन में विभिन्न राज्यों से कवि-साहित्यकार, पत्रकार आये थे. इस अवसर पर नागरी लिपि परिषद नई दिल्ली के महासचिव हरीसिंह पाल, प्रो० ज्योति शर्मा, मनोज कुमार, राकेश शर्मा, राम लक्ष्मण गुप्त, डॉ.जनार्दन प्रसाद त्रिपाठी, कलाकार रमेश पाल, सम्मेलन के आयोजक व पत्रकार रामपाल त्रिपाठी, अमरेन्द्र सिंह आदि मौजूद थे.

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

सम्मानित पाठकों अपनी प्रतिक्रियाओं, शिकायतों, सुझावों से हमें अवगत कराते रहे ताकि पत्रिका को निखारने, उपयोगी बनाने में हमें मिल सके. धन्यवाद। संपादक

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1–20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिए:** पं. नेहरु सम्मान(देश हित व समाज सेवा), चन्द्रावती देवी सम्मान (हिन्दी व साहित्य सेवा), गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) 2–20 से 40 **वर्ष के लिए:** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), पवहारी शरण द्विवेदी सम्मान(समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए) निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए), पत्रकारश्री (पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान), कलाश्री(कला (नाटक/गायन/वादन/चित्रकला, नृत्य) के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), समाजश्री (समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), काव्यश्री (काव्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), व्यंग्यश्री (व्यंग्य-गद्य/पद्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), कहानीश्री (लघुकथा/कहानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) 3–40 **वर्ष से ऊपर के लिए:** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), पत्रकार रत्न (पत्रकारिता/संपादन के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), समाज शिरोमणि (समाज सेवा के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), काव्य शिरोमणि (एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित), साहित्य शिरोमणि (समग्र साहित्य लेखन, एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित) **4-सभी आयु वर्ग के लिए: हिन्दी सेवियों के लिए:** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (हिन्दी की विशेष सेवा के लिए), **राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है), **राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्री:** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधिाश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए) 5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-1–20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिए:** पं. नेहरु सम्मान(देश हित व समाज सेवा), चन्द्रावती देवी सम्मान (हिन्दी व साहित्य सेवा), गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) 2–20 से 40 **वर्ष के लिए:** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), पवहारी शरण द्विवेदी सम्मान(समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए) निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए), पत्रकारश्री (पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान), कलाश्री(कला (नाटक/गायन/वादन/चित्रकला, नृत्य) के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), समाजश्री (समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), काव्यश्री (काव्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), व्यंग्यश्री (व्यंग्य-गद्य/पद्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), कहानीश्री (लघुकथा/कहानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) 3–40 **वर्ष से ऊपर के लिए:** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), पत्रकार रत्न (पत्रकारिता/संपादन के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), समाज शिरोमणि (समाज सेवा के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), काव्य शिरोमणि (एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित), साहित्य शिरोमणि (समग्र साहित्य लेखन, एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित) **4-सभी आयु वर्ग के लिए: हिन्दी सेवियों के लिए:** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (हिन्दी की विशेष सेवा के लिए), **राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी

प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है), **राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्रीः** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधिश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए)

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर लिखि पाण्डुलिपि जो 2016 के बाद लिखी गई हो, प्रकाशित/अप्रकाशित हो, पर दिया जाएगा. प्रत्येक के लिए दो हिन्दी साहित्य सेवी प्रस्तावक का होना आवश्यक है.

विशेषः 1. प्रत्येक वर्ग के लिए दिये गये विभिन्न सम्मानों के लिए उत्कृष्ठ किसी एक का ही चयन किया जाएगा। 2. उपाधियों के लिए चयन त्रिस्तरीय निर्णायक मंडल द्वारा किया जाएगा. 3. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ में एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका भेजना होगा। 4. क्रम संख्या एक के लिए सहयोग राशि रुपये 100/ मात्र तथा क्रम संख्या 2 से 5 के लिए रुपये 500/ सहयोग अपेक्षित है। 5. सभी आयु वर्ग में शामिल प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज मासिक की वार्षिक सदस्यता (रुपये 150/ निशुल्क) प्रदान की जायेगी। 6. सभी वर्ग में विजयी प्रतिभागियों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की साधारण सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी। 7. क्र.सं. 2 से 5 तक के सभी प्रतिभागियों को संस्थान द्वारा प्रकाशित रुपये 500/ तक की पुस्तकें उपहार स्वरुप प्रदान की जायेगी। 8. सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट/ध नादेश/ सीधे खाते में (आन लाईन/ऑफ लाईन) **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से 'सचिव **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद**' के नाम से खाता संख्याः **538702010009259** आईएफएससी कोड–**यूबीआईएन–0553875** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. 9. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. 10. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. सम्मान डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा. 11. अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार करना संभव नहीं होगा। 12. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद(प्रयागराज) होगा. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करेंः

अंतिम तिथिः 15 नवम्बर 2019

संपर्क कार्यालयः

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, श्याम डी.जे., लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द चन्द्र मिशन रोड, मुंडेरा,
धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011, ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com,
hindiseva15@gmail.com, 9335155949

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण 1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था
3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था 4.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ई–मेलः sahityaseva@rediffmail.com

साहित्य जगत के शिल्पी आनन्द का साहित्य

साहित्य जगत के सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर डा० अरूण कुमार आनन्द का जन्म निर्धन ब्राह्मण स्व. पं. रामप्रसाद भारद्वाज के घर जनपद बिजनौर के धामपुर में सन् 24.04.1928 को हुआ. आपके पिता फूलवति धामपुर रियासत के ओहदेदार थे. आपने एम०ए०-हिन्दी और पी.एच.डी. साहित्य कला में कर साहित्य सम्पादन एवं प्राध्यापन किया, आप वाराणसी में साहित्य सम्पादक के रूप में जुड़े रहें. तत्पश्चात आकाशवाणी दिल्ली और लोकसभा सचिवालय में सेवार्थ रहे. 13 वर्ष की आयू से ही साहित्य सृजन में संलिप्त है. आपके दो ग्रंथ और अनेक उपन्यास प्रकाशित हो चुके है.

नम्र मृदु सरल एवं सहृदय व्यक्तित्व के स्वामी वयोवृद्ध संत डा० अरूण स्वयं के संबध में कहते है- मैं एक साधारण लेखक हूँ, अपनी जमीन पर साहित्य सृजन का वीर्य लेकर खड़ा हूँ. 'मृत्युपरांत', 'मृत्यु के बाद' रचना मेरे लिए एक मानवीय प्रयास है, जो विश्व स्नेह समाज पत्रिका में धारावाहिक प्रकाशित हुआ है. जो स्वाद मक्की और चने की मिस्सी रोटी में है वह पूड़ी कचौड़ी में कहां है? अपने पाठकों तक सरलता से पहुंचना चाहता हूँ. जैसे साहित्य नही मेरी विवसता है. हवा-पानी की तरह मेरी रचना नही. मेरी कोशिश साहित्य की सीढ़ी से पहाड़ में चढ़ने की नही है. न मेरी पहाड़ पर चढ़ने की तमन्ना है, मैं तो सिर्फ अविरल साहित्यिक नदी की तरह प्रवाहित होना चाहता हूँ. समुद्र निकट है कब नदी समुन्द्र में मिलकर बिलिन हो जाए, ईश्वर जानता है. मेरा स्वप्न वृक्षों पर लगें 'गुरांश' के फूलो की तरह है वैसे डा० अरूण जी की साहित्यिक रचनाएं बाजारू साहित्य से अलग हटकर समय के परिदृष्यों को समग्र प्रतिबिम्ब करती है. वे लिखते हैं जिसे अन्याय गुनाह नहीं लगता उसे न्याय कैसा लगेगा? जिसे देश की गुलामी नही लगती उसे आजादी कैसी लगेगी? ज्ञान और साहस तो जीवन है, जिसे डा० आनन्दजी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यास ''मुगल-ए-आजम की विरासत'' में व्यक्त किया है. नई पीढ़ी के लिए साहित्य की बागवानी करने में भी डा० अरूणजी कमतर नही है. तभी तो उनका साहित्य अच्छा है.

इसी प्रकार समाज के स्तरहीन नजरिये पर व्यग्यांत्मक बाण चलाते हुए कहते हैं-'पढ़ाई-लिखाई की कौन बात करें कोई नौकरी करना नही/नौकरी बहुत कर लिया मगर छोकरी नहीं मिली अलबत्ता पेंशन मिलने लगी. ''हय मुहब्बत के ख्वाब सजाते रह गये, परवाना पास से गुजर गया शमां को सै गुजार भी नही हुआ, वर्ना जला डालती परवाने को?''

उसके बिना बानी नही, मदानी चलवाना है, घी मिले न मिले मट्ठा तो मिलेगा? उससे बर्तन मजवाना है, साहित्य लिखवाना नही. साहित्य में उनकी यह पक्तियां हमें चिंतन को बाहय करती है. यह पक्तियां हैं- उपन्यास ''फूटपाथ का आदमी'' का। मुगल-ए-आजम की विरासत में-''मुकम्मल-ए-दस्तूर'' उर्दू अरबी शब्दों का खूब प्रयोग हुआ है. ''मुगल सल्तनत'' एक मुहावरा है.

लगभग पिछले छः दशकों से साहित्य की विभिन्न विद्या शैलीयों में सृजन कला में कमाल का प्रभाव उनके साहित्यों में दिखाई देता है, को अपनी निर्वाह लेखनी से पल्लवित पुष्पित और सुरभित करने वाले अशक्त सृर्जन घमी साहित्यकार डा० अरूण आनन्द को उत्तराखण्ड शिक्षा अनुदान आयोग देहरादून, भारतीय भाषा संस्थान हैदराबाद, से संलिप्ता के बावजूद आज लगभग जीवन के अन्तिम पड़ाव में भी साहित्य और लोक कल्याणार्थ मंचों पर बादस्तूर मौजूदगी महत्वपूर्ण है.

वर्तमान समय में जबकि बाजार में प्रेमचन्द जैसे साहित्यों का अभाव है, में साहित्यिक पाठक कम पढ़ पा रहे है-

इसलिए पीत साहित्य और पीत साहित्यकारों के मंचो पर जमावड़ा बढ़ता ही जा रहा है. जो साहित्य की आड़ में फूहड़ साहित्यकारो की भीड़ में सदसाहित्य को आज भी बचाए रखने की जीवंत सार्थकता जिन्होने प्रदान की है. उनमें स्व० अज्ञेय-श्री फणिश्वर नाथ रेण 'नागर' आदि के बाद भवानी प्रसाद मिश्र (काव्य और डा० अरूण कुमार आनन्द का नाम वंदनीय है.

बहरहाल शेष सर्दभों में आज भी ऐसे सशक्त रचनाकारों की कमी नही है जो प्रकाशकों की स्वार्थवादिता के कारण अंधेरे में छुपे हुए है, को तलाश कर प्रकाश में लाने की संजीव योजना ''विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान'' इलाहाबाद उ०प्र० की सराहनी काबिले तारिफ है.

''गुजरे हुए समेंटेंगे फिर हम,
उजड़े गुलशन की खुशबू।
खूशबू के जरिए उतरेंगे हम,
पाएगे मुम्मल मुकाम जहां में,
जहां कभी बरसते थे फूल।।''